सीआरपीएफ समाचार

वर्ष 61 अंक 1 सितम्बर - अक्टूबर, 2015



अमर शहीदों की स्मृति में

"वॉरियर्स रिमेम्बर्ड"

पुस्तक का भव्य विमोचन



माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ''सरदार पोस्ट एक गाथा'' कॉमिक बुक का विमोचन करते हुए, साथ में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरण रिजिजू एवं केरिपुबल के महानिदेशक श्री प्रकाश मिश्र



भारतीय सेना द्वारा इन्डिया गेट पर आयोजित 1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध की स्वर्ण जयन्ती प्रदर्शनी में
श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक, सरदार पोस्ट की पवित्र मिट्टी वाले कलश पर माल्यार्पण करते हुए, साथ में श्री दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक

चीफ पेट्रन: श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक, संपादकीय सलाहकार मण्डल

अध्यक्ष: श्री के. दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक (परिचालन व कार्य)

सदस्य: श्री आर.पी. सिंह महानिरीक्षक (कार्मिक), श्री आर.के. मिश्रा, महानिरीक्षक (संभरण), श्री जुल्फिकार हसन, महानिरीक्षक (परिचालन), श्री एम.पी.एस. नेगी, निदेशक, सीआरपीएफ अकादमी, श्रीमती अनुपम कुलश्रेष्ठ, उप महानिरीक्षक (प्रशासन), श्रीमती ऐनी एब्राहम, उप महानिरीक्षक (आसूचना), ब्रिगेडियर अरुण बाली, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)

सीआरपीएफ समाचार एक द्विमासिक पत्रिका है। इसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है ।

– मुख्य संपादक

मुख्य संपादक : भुवन चन्द्र खंडूरी

संपादक : सत्येन्द्र सिंह

संपादकीय सहायता व रूपरेखा : तमाल सान्याल

चित्र : जनसंपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय और सीआरपीएफ यूनिट्स

संपादकीय कार्यालय : महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लाक-1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, दूरभाष: 24360649

महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशित: मित्तल एण्टरप्राइजेज, 2076, गोकुलशाह गली, सीताराम बाजार, दिल्ली-06

कवर फोटो कैप्शन: श्री नरेन्द्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री 'वारियर्स रिमेम्बर्ड' पुस्तक का विमोचन करते हुए। साथ में हैं श्री अजीत डोवाल, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक केरिपुबल, श्री के. दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक केरिपुबल व अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण

इस अंक में

Book Release: PM Releases 'Warriors Remembered' 2

शौर्य गाथा पर कॉमिक का विमोचन 3

DG CRPF Felicitates Brave Hearts 4

PM Witnessess CRPF's Tale of Valour 9

वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी : झलकियाँ 10

Book Release : Beyond the Baton 13

23rd RAF Anniversary Celebrations 14

9वीं अखिल भारतीय पुलिस निशानेबाजी प्रतियोगिता 18

Digital Self Tracking 20

प्रेरक कथा : सेवानिवृत्त कमाण्डेण्ट की उपलब्धि 23

Aiming High 24

Leading the Women's Charge in Football 26

Tech Zone : Net Neutrality 28

Travelogue : Kashmir : An unforgettable experience 30

कवितायें 34

लेख 36

महानिदेशक के दौरे 39

महानिदेशालय समाचार 40

विविध समाचार 43

परिचालनिक उपलब्धियाँ 45

अन्य उपलब्धियाँ 48

शहीदों की याद 50

विदाई/स्थानान्तरण एवं पदोन्नति 51

उपलब्धि 52

PM releases "Warriors Remembered"

On the occasion of the Police Commemoration Day – 21st October, 2015 – the Prime Minister released a compendium, compiling the brave deeds of 2025 martyrs for the period with effect from 1939 to September, 2015, in the form of exhaustive volumes.

Shri Narendra Modi, the Prime Minister of India, during the Annual Conference of the DsGP in 2014, had desired that every police force compile the acts of bravery of its officers and men, so that they can inspire future generations.

A copy of the book has been presented to the family members of every martyr by CRPF formations across the country.



It is the cause,
not the death
that makes the martyr.

Napoleon Bonaparte

शौर्य गाथा पर कॉमिक बुक का विमोचन



श्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय गृहमंत्री ने 1965 के भारत–पाक युद्ध के दौरान सरदार पोस्ट पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) द्वारा प्रदर्शित शौर्य और बलिदान की गाथा पर आधारित कॉमिक बुक **''सरदार पोस्टः एक शौर्य गाथा''** का विमोचन किया। 9 अप्रैल, 1965 को 'रन ऑफ कच्छ' (गुजरात) में सरदार पोस्ट पर सी.आर.पी.एफ की दो कम्पनियों ने एक पाकिस्तानी इंफैन्ट्री ब्रिगेड का डट कर मुकाबला किया और उन्हें पीछे खदेड़ दिया। सी.आर. पी.एफ. के जवानों द्वारा इतना बड़ा जवाबी हमला किया गया कि पाकिस्तानी अपने 34 सैनिकों, जिनमें दो अधिकारी भी शामिल थे, को छोड़ कर भाग खड़े हुए। 4 पाकिस्तानी सैनिकों को गिरफ्तार किया गया। सी.आर.पी.एफ. के 6 जांबाज़ो ने वीरगति प्राप्त की।

पुस्तक का विमोचन करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सीआरपीएफ ने इस तरह की कॉमिक बुक प्रकाशित कर एक नई पहल की है। उन्होंने कहा कि इस बल की कई उपलब्धियाँ हैं। सीआरपीएफ ने 21 अक्टूबर, 1959 को लद्दाख में हॉट स्प्रिंग पर चीनी आक्रमण का डटकर मुकाबला किया था और 1971 के बांग्लादेश युद्ध में भी भाग लिया था। 2001 में उसने संसद पर हुए आतंकी हमले को नाकाम कर दिया। गृहमंत्री ने कहा कि सीआरपीएफ नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में माओवादियों से और जम्मू व कश्मीर में आतंकवादियों का डटकर मुकाबला कर रहा है। इस बल के लगातार अभियानों के कारण माओवादी गतिविधियों में 35 प्रतिशत की कमी आई है। उन्होंने कहा कि यह कॉमिक बुक बच्चों और नौजवानों का प्रेरित करेगी और सीआरपीएफ के जवानों की बहादुरी पर बलिदान के बारे में लोगों को अवगत करायेगी।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए सीआरपीएफ के महानिदेशक श्री प्रकाश मिश्र ने कहा कि पिछले महानिदेशक सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया था कि देश की रक्षा करते हुए शहीद हुए जवानों की कुर्बानी याद रखने के लिए हमें उनकी वीरता का प्रचार–प्रसार कर देश के लोगों को बताना चाहिए। इसी क्रम में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा कॉमिक की एक श्रृंखला शुरू की जा रही है। उन्होंने कहा कि 27 जुलाई, 2015 को नीमच में स्थापना दिवस परेड के अवसर पर माननीय गृह मंत्री ने सरदार पोस्ट युद्ध में भाग लने वाले बल के सब इंस्पेक्टर भवानी दत्त शर्मा को सम्मानित किया।

सीआरपीएफ की योजना कॉमिक बुक की एक पूरी श्रृंखला द्वारा बल के शौर्य एवं बलिदान की विभिन्न गाथाओं का चित्रण करने की है। इसका उद्देश्य युवा पीढ़ी में देश भक्ति और राष्ट्रवाद की भावना जगाना तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के गुमनाम नायकों के शौर्य और बलिदान की गाथा से आम जनता को अवगत कराना है। इस बात पर भी विचार हो रहा है कि इस कॉमिक श्रृंखला के जरिये शहीदों के लिए धनराशि का एक कोष बनाया जाए जिसे उनके परिवार के कल्याण की योजनाओं पर खर्च किया जायेगा।



श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार, केरिपुबल की कॉमिक बुक का विमोचन करते हुए, साथ में श्री किरण रिजिजू, गृहराज्यमंत्री एवं श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक, केरिपुबल

DG CRPF FELICITATES THE BRAVE-HEARTS

CRPF bagged 101 gallantry medals in the year 2015, the highest ever by the Force. Having won the lion's share i.e. 65 out of 149 gallantry medals, awarded to the police forces and the CAPFs on the occasion of the Nation's 69th anniversary of Independence, Central Reserve Police Force on 7 September 2015 organized a felicitation ceremony to honour these medal winners at its headquarters. Directorate General CRPF, Sh. Prakash Mishra, presented a memento alongwith a letter of appreciation to all the awardees. The DG CRPF praised the role of these awardees and the examples set by their heroic deeds for troops to emulate. He also thanked them for bringing this glory to the force.

The Force which is presently handling the most complex Internal Security situations which ranges from violent law and order situations to fighting armed guerillas has been decorated with 1499 medals for the gallant acts of its officers and men till date, since its raising in July 1939, which includes 01 George Cross, 03 King's PMG, 01 Ashok Chakra, 01 Kirti Chakra, 01 Padma Shri, 01 Vir Chakra, 13 Shaurya Chakras, 49 PPFSMG, 189 PPMG, 01 Yudh Seva Medal, 05 Sena Medal, 04 Vishisht Seva Medal, 1124 PMG, 05 IPMG, 03 Jeevan Raksha Padak and 98 PM's Police Medal for Life Saving.

Over the years the Force has been instrumental in tackling insurgency in the North East, terrorism in Punjab, and separatism in J & K. The bulk of the Force is currently committed to tackling the Left Wing Extremist menace in LWE affected states of the country where more than 80,000 officers and men are deployed. The steadfastness and commitment of the Force to carry on the fight against Left Wing Extremism can be very well gauged from the number of gallantry medals awarded to the Force: 46 of the 65 medals have been awarded for the extraordinary acts of valour displayed by the troops while countering Left Wing Extremists; 12 medals for gallantry have been conferred for fighting insurgency in the North East with the elite 210 CoBRA Unit bagging 09 of them; indeed, no mean feat for a single Battalion. 210 CoBRA has again proved as to why it is the most sought after force in the North East theatre. In the LWE theatre, 7 Battalion has shown as to how surgical operations after developing the intelligence should be conducted and it has been awarded with 12 gallantry medals.

The other 9 CoBRA Units deployed in the Left Wing Extremism affected states of Chattisgarh, Jharkhand and Bihar have been awarded 18 medals for acts of conspicuous bravery exhibited by their troops.

Six gallantry medals have been awarded to the troops deployed in the Kashmir Valley.

On the occasion, DG CRPF emphasized that the Force will remain committed in its fight against the anti-national elements that threaten to damage the very ethos of democracy and are intent upon destroying the unity and integrity of the Nation.



DG CRPF presenting memento and appreciation letter to Smt. Binu Jha W/o Shaheed Heera Kumar Jha 2 I/C, Shaurya Chakra



DG CRPF presenting memento and appreciation letter to Smt. Baby Niharika W/o of Shaheed Insp. Pariwal Parimal, PPMG



SH. RINCHEN WANGYAL WAWA
CO., 201 BN



CT/GD UTTAM KUMAR DHRUWE
201 BN



CT/GD TANMAY BHOWMIK
204 BN



SI/GD SUBHASH CHANDRA ROY
SI 07 BN



CT/GD SRIKANT PANDEY
07 BN



CT/GD SHINDE PRASHANT LAXMAN
210 COBRA



SH. ALOK PANWAR, AC



CT/GD RAVINDER KUMAR
93 BN



CT/GD GURU PRASAD K.N.
150 BN



CT/GD DIPTI RANJAN BISWAL
203 BN



SH. HARMINDER SINGH
CO 136 BN



CT/GD NARENDRA KUMAR
209 BN



CT/GD BHUDEV SINGH
16 BN



SI/GD JASWANT SINGH,
185 BN



CT/GD SHABIR AHMAD PORE
133 BN



SH. KULDEEP SINGH
AC 210 BN



CT/GD MUKESH KUMAR GURJAR
150 BN



SH. AMIT SHARMA
DC 210 BN



CT/GD BABLOO KUMAR
210 BN



SH. RANJAN SINGH
DC, 210 BN



ASI/GD GIRENDER SINGH TOMAR
218 BN



CT/GD MUKESH KUMAR SINGH
94 BN



CT/GD GULAB SINGH
94 BN



SH. RANJEET MANDAL
AC, 94 BN



SH. SUNIL KUMAR SHARMA
AC, 94 BN



CT/GD BACHAN SINGH
07 BN



CT/GD BALWANT SINGH
07 BN



CT/GD SANDEEP KUMAR
07 BN



SI/GD HARI KISHAN
SI 07



SH. AJIT KUMAR
AC, 07 BN



SH. SURESH KUMAR YADAV
DC, 07 BN



CT/GD SANTOSH KUMAR PANDEY
210 BN



HC/GD HARISH KUMAR
210 BN



SI/GD ARVIND DADORIA
210 BN



SH. AMRENDRA TIWARI
AC, 210 BN



CT/GD MANOJ RAM
185 BN



ASI/GD REVANA SHIDDAPPA K
185 BN



SH. BRIJENDRA KUMAR MISHRA
DC, 208 BN



CT/GD JAI RAM TIWARI
208BN



CT/GD AMIT JAMWAL
208 BN



CT/GD BORSE DEEPAK SURESH
208 BN



SH. AJIT KUMAR
AC, 07 BN



INSP/GD MOHD. ASHFAQ KHAN
185 BN



CT/GD HEMEN KALITA
185 BN



CT/GD PARVEEN KUMAR SAINI
185 BN



CT/GD VIKAS SADOTRA
170 BN



CT/GD CHAMCHAM KUMAR
168 BN



SH. ANJANI KUMAR
AC, 204 BN



CT/GD DHANANJAY DAS
204 BN



SH. SURESH KUMAR
AC, 120 BN



CT/GD K.VENKATACHALAM
120 BN



CT/GD KHOT SAGAR RACHANDRA
120 BN



CT/GD VIJAY SINGH RATHORE
150 BN



SH. DHARAMPAL
AC, 201 BN



CT/GD PRAVEEN KUMAR
201 BN



SH. SANJAY KUMAR
DC, 26 BN



SH. MANOJ KUMAR YADAV
AC, 203 BN



SH. DILIP KUMAR SINGH
AC, 133 BN



SI/GD MAHESH CHAND MEENA
203 BN

PRIME MINISTER WITNESSES CRPF's TALE OF VALOUR AT 1965 INDO-PAK WAR EXHIBITION



One of the most glorious chapters in the military history of the nation was written by the brave men of CRPF on 9th April 1965 when only two companies of CRPF stood their ground and repulsed the attack of a full Pakistani Brigade inflicting heavy casualties during Indo- Pak war of 1965.

It is a unique and unparalleled feat in military history , where a heavily outnumbered contingent of paramilitary personnel forced the withdrawal of a regular Army Infantry Brigade, holding them at bay for 12 long hours. The valour of all CRPF men who fought, unmindful of their own safety, the well being of all their dear ones and driven solely by their duty to defend their motherland at all costs, was widely applauded and recognized by a grateful nation.

Shri Gulzari Lal Nanda the then Hon'ble Home Minister remarked "**This battle will go down in the history of Indian Police, nay in the history of military battle**".

CRPF fought alongside the Indian Army in the war of 1965. For their gallant action and conspicuous bravery, CRPF was awarded 16 President's Police Medal for Fire Service and Gallantry and 15 Police Medals for Gallantry. Among these, 13 medals were won for operations in the Rann of Kutch, Gujarat and 18 were won for operations in Jammu & Kashmir. 3, 6, 13, 14, 15 and 16 battalions of CRPF participated in the Indo-Pak War of 1965. .

The Force had erected a kiosk at India Gate, where the 50th anniversary of the 1965 Indo-Pak War was being celebrated. The weapons used by our men and those captured from the enemy, were also displayed. Apart from this, newspaper cuttings of the Sardar Post battle, panels depicting the tale of battle, pictures of martyrs etc. and a documentary film on the battle was also showed at the kiosk. It was visited by VVIPs and commoners alike. Sh Narendra Modi, Hon'ble Prime Minister of India took a keen interest in the stall, when he visited it and was briefed about the historical feat.







वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी

सीआरपीएफ की वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी (सीआरपीएफ मेला) का दिनांक 16/10/2015 को माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह की पत्नी श्रीमती सावित्री सिंह ने उद्घाटन किया । इस अवसर पर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजित डोवल की पत्नी श्रीमती अरूणी डोवल, प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव श्री नृपेन्द्र मिश्रा की पत्नी श्रीमती कुसुम मिश्रा, कावा अध्यक्षा श्रीमती संध्या मिश्र, सीआरपीएफ के महानिदेशक श्री प्रकाश मिश्र, वरिष्ठ अधिकारी जवान और उनके परिवार उपस्थित थे। तीन दिन के इस मेले में विभिन्न ग्रुप केन्द्रों और सेक्टरों के 32 स्टॉल लगाये गये थे, जिनमें संबद्ध क्षेत्र के सामान और हाथ से निर्मित वस्तुओं की रियायती दर पर बिक्री की गयी।

इस अवसर पर श्रीमती सावित्री सिंह ने कहा कि सीआरपीएफ के कार्मिक अत्यन्त कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए भी अपने फर्ज को हर कुर्बानी देकर निभाना ही अपना धर्म समझते हैं। सीआरपीएफ के जवानों को ज्यादातर समय घर परिवार से दूर रहना पड़ता है, ऐसी स्थिति में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल परिवार कल्याण संस्था, जवानों की पत्नी और बच्चों की उचित देखभाल करने के साथ–साथ इन्हें विभिन्न कला–कौशल सिखाकर उनमें आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता का संचार कर के महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

अपने स्वागत भाषण में कावा अध्यक्षा श्रीमती संध्या मिश्र ने कहा कि सन् 1995 में सीआरपीएफ परिवार कल्याण संस्था एक लघु संस्था के रूप में अस्तित्व में आई, जो परिवारों की देखभाल के लिए पूरे देश भर में फैल गई। यह कल्याण संस्था, सेवानिवृत्त कार्मिकों, शहीदों की विधवाओं/आश्रितों, अशक्त बच्चों/ कार्मिकों और समाज के



कमजोर वर्ग के लिए एक मजबूत सहायता मंच प्रदान कर रही है। श्रीमती संध्या मिश्र ने कहा कि हमने सामाजिक सेवाएं प्रदान करने में अपने संकल्प को पूरा किया है साथ–ही–साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर के नेपाल में भी भूकम्प पीड़ितों को राहत सामग्री पहुँचाई है।



श्रीमती संध्या मिश्र, अध्यक्षा कावा, श्रीमती सावित्री सिंह पत्नी श्री राजनाथ सिंह माननीय गृहमंत्री भारत सरकार को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत करती हुईं

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने नक्सल विरोधी अभियान में अशक्त हुए सिपाही श्री शंकर यादव को मोटर से चलने वाली व्हील चेयर प्रदान की । इसके अलावा श्रीमती सावित्री सिंह ने सर्वोत्तम परिवार कल्याण केन्द्र की ट्रॉफी ग्रुप केन्द्र जालंघर को और रनर्स अप की ट्रॉफी ग्रुप केन्द्र पुणे को प्रदान की। परिवार कल्याण केन्द्र, ग्रुप केन्द्र पुणे की श्रीमती सीमा देवी को सर्वश्रेष्ठ महिला कार्यकर्ता घोषित किया गया, जबकि ग्रुप केन्द्र जालंधर की श्रीमती परमजीत कौर ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

कल्याण प्रदर्शनी के समापन समारोह के अवसर पर श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक मुख्य अतिथि थे। अपने स्वागत भाषण में कावा अध्यक्ष श्रीमती संध्या मिश्र ने घोषणा की कि अशक्त बच्चों की सहायता के लिए मुस्कान योजना शुरू की जायेगी। इसके लिए 10 लाख रूपये की राशि दी जायेगी। महानिदेशक ने भी इस योजना के लिए और 10 लाख रूपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि इस समय बल के कार्मिकों के लिए 11 प्रतिशत आवास हैं, जिन्हें बढ़ाकर 25 प्रतिशत और बाद में 50 प्रतिशत करने की कोशिश की जायेगी। उन्होंने कहा कि महिलाओं को वर्दी की

उद्घाटन समारोह की झलकियाँ















सिलाई के काम से हटाकर अन्य उत्पादक कार्यों में लगाया जाना चाहिए और वर्दी के लिए जवानों को नकद राशि दी जानी चाहिए। महानिदेशक ने कहा कि परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा बनाये गये सामान की बिक्री परिसर के मुख्य द्वार के पास की जानी चाहिए ताकि बाहर के लोग भी इन्हें खरीद सकें।

महानिदेशक ने इस अवसर पर बल के 31 मेधावी छात्रों को शहीद स्मारक छात्रवृत्ति प्रदान की। इस कल्याण प्रदर्शनी में ग्रुप केन्द्र, नोएडा के स्टॉल को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया, जबकि ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली दूसरे स्थान और ग्रुप केन्द्र जालंधर तीसरे स्थान पर रहा। सर्वश्रेष्ठ महिला कार्यकर्त्ता का पुरस्कार ग्रुप केन्द्र पुणे की श्रीमती सीमा देवी को मिला जबकि श्रीमती परमजीत कौर, ग्रुप केन्द्र जालंधर एवं श्रीमती मदीना बेगम, ग्रुप केन्द्र–1, अजमेर दूसरे एवं तीसरे स्थान पर रहीं। रैफल ड्रॉ के प्रथम विजेता सि./जीडी रगुजी को महिन्द्रा स्कॉर्पियो एवं दूसरे विजेता सिपाही/जीडी विक्रम सिंह को स्विफ्ट डिजायर दी गयी।

समापन समारोह की झलकियाँ











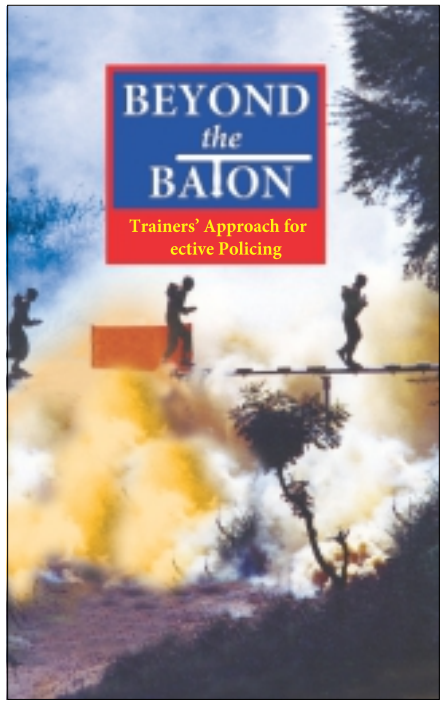


Release of "Beyond the Baton"

Sh Prakash Mishra, DG CRPF released the book “Beyond the Book” on 5th September, 2015 at Group Centre, Greater Noida. The book is authored by Sh R.K.Singh, Commandant. The book throws light on the challenges of policing in the country and how to tackle them. According to the author, policing is among one of the most important professions of state as it secures life and liberty of people as well as upholds the rule of law. It has always been facing challenges due to dynamics of internal security and colonial mindset of the administration. The obvious reference of abuse of power by police is because of its behavior, professional incompetence and being partial to people in power and the affluent. Most of the attitudinal issues can be tackled if they are trained and groomed in a professional manner. The image of the police is not people friendly. The contemporary literature and art portrays it negatively. Not always unfairly but definitely not fairly either. We need to improve, innovate and involve to serve the common man. Only our approach to serve people will improve our image and credibility. The attitude of service amongst us will make people to think of us being essential part of noble service.

The core motivation of “Beyond the Baton- Trainers' Approach for Effective Policing”, is that as India grows fast, faster still grows its need for better policing. Because in addition to traditional crimes like domestic violence and theft, there are growing threats posed by land and labour disputes, naxalism, IT scams etc. Cricket is a case in point; where we used to chase only betting and sometimes match-fixing, now spot-fixing has come into its own. Society expects police to address these new challenges with speed and smartness.

In scrambling to meet these new challenges, police is handicapped by an extremely inadequate policemen-population ratio. This is unlikely to improve dramatically in the short to medium term. Beyond the Baton recommends that the only solution is to make the police dramatically more competent instead, sort of hyper



capable.

Actually there is no alternative to this, with both people's expectations and security challenges showing an upward trend. And Beyond the Baton recognizes that at the heart of this mission is the role of trainers. A new police for a new age can't be forged in the same old ways. It is time to remedy the old and autocratic hangover of the colonial age, time for training modules that encourage a constructive rather than antagonistic interface with the public, where trainees are not belittled but built into emotionally and analytically adept policemen and policewomen. Without them, India cannot march into a secure and smart future.

This book is an attempt to address such issues. There may be many things which might be missing and need further thoughts. But efforts have been made to initiate a debate and thoughts towards focused approach on training for professional excellence.



DG CRPF releases a book "Beyond the Batton" written by Mr. R.K. Singh, Commandent 89 BN

BLUE TROOPERS CELEBRATE THEIR 23RD ANNIVERSARY

23rd RAF (Rapid Action Force) Anniversary was celebrated in the premises of 99 RAF, Hakimpet, Secunderabad, Telengana with great pomp, show and fervour. Sh. Haribhai P. Chaudhary, Hon'ble Minister of State for Home Affairs presided over the function. The highlight of the event was the sparkling ceremonial parade in blue disruptive pattern uniform which kept the audience enthralled. 78 CRPF officers were bestowed with President's Police Medals for their meritorious and distinguished services. Speaking on the occasion, Sh. Haribhai P. Choudhary Hon'ble MoS recalled the key contribution / role played by the RAF units which are deployed in ten sensitive locations in India, in tackling various communal riots / riotous situations. He lauded the RAF units for being the most consistent, reliable force with inherent capacity for rapid mobilization to tackle difficult law & order situations throughout the nation. He intimated that 4 new RAF units were also sanctioned by Central Govt. to augment the strength of RAF. Shri Hari Bhai P. Chaudhary presented Best battalion trophy to 100 RAF Bn, Best operational battalion trophy to 103 RAF Bn and Best cost effective battalion trophy to 104 RAF Bn. 104 & 107 RAF Bns were declared 1st Best Marching Contingents, 99 & 105 RAF Bns. were declared 2nd and 101 & 106 Bns were declared 3rd Best Marching Contingents. Another event which captivated the audience was the breathtaking motorcycle daredevil stunts by RAF Mahila commandos. Sh. Prakash Mishra, IPS, DG, CRPF, Sh. K. Durga Prasad Spl. DG, CRPF, Sh. K.S. Bhandari, IG, RAF and other senior officers of CRPF and the State Police also attended the function.









Glimpses of the Parade





Medal and Trophy Distribution









Amazing Feats





Group Photograph



Cultural Extravaganza







9वीं अखिल भारतीय पुलिस निशानेबाजी प्रतियोगिता–2015

केंन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, कादरपुर, गुड़गांव में पॉच दिवसीय 9वीं अखिल भारतीय पुलिस निशानेबाजी प्रतियोगिता–2015 दिनांक 26/10/2015 से 30/10/2015 तक आयोजित किया गया । जिसका शुभारंभ कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर, माननीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री ने किया एवं समापन श्री किरण रिजिजू माननीय गृह राज्यमंत्री द्वारा किया गया।



इस अवसर पर मुख्य अतिथि कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर ने कहा कि एक निशानेबाज होने के नाते वे इस प्रतियोगिता का शुभारंभ करते हुए अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहें है । उन्होंने कहा कि खेल से टीम भावना पैदा होती है जिससे खिलाड़ी एक–दूसरे के नजदीक आते हैं । उन्होंने कहा कि खेलों में एवं अन्य क्षेत्रों में लगन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एवं मार्गदर्शन जरूरी है । कर्नल राठौर ने खिलाड़ियों के लिए बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराने पर जोर दिया ताकि, वे अपने चुने हुए खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें । कर्नल राठौर ने वामपंथी उग्रवाद क्षेत्रों में नक्सलियों का मुकाबला करने में केरिपुबल के अच्छे प्रदर्शन की प्रशंसा की । कर्नल राज्यवर्धन राठौर ने इस अवसर पर एक स्मारिका का भी विमोचन किया ।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री किरेन रिजिजू ने कहा कि निशानेबाजी दिन–प्रतिदिन एक महत्वपूर्ण खेल बनता जा रहा है और ओलम्पिक में तैराकी के अलावा निशानेबाजी में सबसे ज्यादा स्पर्धायें होती हैं। उन्होंने खुशी व्यक्त की कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुलिस बलों के ज्यादा–से–ज्यादा खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं और पदक प्राप्त कर रहे हैं और आशा व्यक्त की कि अगले रियो ओलम्पिक्स में पुलिस बलों के खिलाड़ी ज्यादा–से–ज्यादा पदक हासिल करेंगे। गृह राज्य मंत्री ने आश्वासन दिया कि प्रशिक्षण के लिए सरकार हर संभव सहायता देगी। निशानेबाजी के लिए शारिरिक और मानसिक फिटनैस, धैर्य और ध्यान जरूरी है। उन्होंने कहा कि चाहे खेल हो या नौकरी, अनुशासन बहुत जरूरी है और कोई ऐसा काम नहीं किया जाना चाहिए जिससे कि संगठन बदनाम हो।











श्री रिजिजू ने 9वीं अखिल भारतीय पुलिस निशानेबाजी (स्पोर्टस) प्रतियोगिता को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए सीआरपीएफ और अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड को बधाई दी।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक, सीआरपीएफ ने कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में खेलों की समृद्ध परंपरा रही है और हमने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पदक जीते हैं। उन्होंने कहा कि इस परंपरा को और आगे बढ़ाया जायेगा।

इस अवसर पर सीआरपीएफ के विशेष महानिदेशक श्री के. दुर्गा प्रसाद, अतिरिक्त महानिदेशक पी.वी.के. रेड्डी, आई.बी. के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आनन्द कुमार तथा पुलिस बलों के वरिष्ठ अधिकारी और जवान मौजूद थे।

पांच दिवसीय 9वीं अखिल भारतीय निशानेबाजी (स्पोर्ट्स) प्रतियोगिता के परिणाम निम्न प्रकार हैं :–

1. बेस्ट रायफल ट्रॉफी (महिला)– सीमा सुरक्षा बल।
2. बेस्ट पिस्टल ट्रॉफी (महिला)– केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
3. बेस्ट रायफल ट्रॉफी (पुरूष)– भारत तिब्बत सीमा सुरक्षा बल।
4. बेस्ट पिस्टल ट्रॉफी (पुरूष)– सीमा सुरक्षा बल।
5. ऑल इण्डिया पुलिस स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड ट्रॉफी– कांस्टेबल महेन्द्र सिंह (सीमा सुरक्षा बल)।
6. ओवरऑल चैम्पियनशिप ट्रॉफी (महिला)– सीमा सुरक्षा बल।
7. ओवरऑल रनर अप ट्रॉफी (महिला)– केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
8. ओवरऑल चैम्पियनशिप ट्रॉफी (पुरूष)– सीमा सुरक्षा बल।
9. ओवरऑल रनर अप ट्रॉफी (पुरूष)– भारत तिब्बत सीमा सुरक्षा बल।



DIGITAL SELF-TRACKING :
A New Oxygen of Life

By Tribhuwan Pratap Singh
Dy. Comdt.
CTC T&IT, CRPF, Ranchi

> Once you start gathering data, recording the dates, toggling the conditions back and forth while keeping careful records of the outcome, you gain a tremendous advantage over the normal human practice of making no valid effort whatsoever.



Humans make errors. We make errors of fact and errors of judgment. We have blind spots in our field of vision and gaps in our stream of attention. Sometimes we can't even answer the simplest questions. Where was I last week at this time? What has been pointed out during yesterday's visit of senior officer? What all stuff I had planned to purchase on monthly super market shopping? Etc. These weaknesses put us at a disadvantage. We make decisions with partial information. We are forced to steer by guesswork. We go with our gut. That is, some of us do. Others use data. People are making careful records of their work, their sleep and their diet.

They say, without good time calibration, it is much harder to see the consequences of your actions. If you want to replace the vagaries of intuition with something more reliable, you first need to gather data. Once you know the facts, you can live by them. Some people may find it crazy or abnormal or strange. But why does what they are doing seem so strange? In other contexts, it is normal to seek data. A fetish for numbers is the defining trait of the modern manager. Corporate executives facing down hostile, shareholders load their pockets full of numbers, so do politicians on the hustings, doctors counseling patients and fans abusing their favorites on social media.

We tolerate the pathologies of quantification — a dry, abstract, mechanical type of knowledge — because the results are so powerful. Numbering things allows tests, comparisons, experiments. Numbers make problems less resonant emotionally but more tractable intellectually. In science, in business and in the more reasonable sectors of government, numbers have won fair and square. For a long time, only one area of human activity appeared to be immune. In the cozy confines of personal life, we rarely used the power of numbers. The techniques of analysis



that had proved so effective were left behind at the office at the end of the day and picked up again the next morning. The imposition, on oneself or one's family, of a regime of objective record keeping seemed ridiculous. A journal was respectable. A spreadsheet was creepy.

And yet, almost imperceptibly, numbers are infiltrating the last redoubts of the personal. Sleep, exercise, sex, food, mood, location, alertness, productivity, even spiritual well-being is being tracked and measured, shared and displayed. Electronic devices allow players to stand on a platform, play physical games, measure their body weight and

compare their stats, are getting a wide support and like from people and these all company's manufacturing the devices are making huge money. Efficiency implies rapid progress toward a known goal. For many self-trackers, the goal is unknown. Although they may take up tracking with a specific question in mind, they continue because they believe their numbers hold secrets that they can't afford to ignore, including answers to questions they have not yet thought to ask.

Until a few years ago it would have been pointless to seek self-knowledge through numbers. Although sociologists could survey us in aggregate, and laboratory psychologists could do clever experiments with volunteer subjects, the real way we ate, played, talked and loved left only the faintest measurable trace. Our only method of tracking ourselves was to notice what we were doing and write it down. But even this written record couldn't be analyzed objectively without laborious processing and analysis. Then four things changed. First, electronic sensors got smaller and better. Second, people started carrying powerful computing devices, typically disguised as mobile phones. Third, social media made it seem normal to share everything. And fourth, we began to get an inkling of the rise of a global superintelligence known as the cloud.

Millions of us track ourselves all the time. We step on a scale and record our weight. We balance a checkbook. We count calories. But when the familiar pen-and-paper methods of self-analysis are enhanced by sensors that monitor our behavior automatically, the process of self-tracking becomes both more alluring and more meaningful. Automated sensors do more than give us facts; they also remind us that our ordinary behavior contains obscure quantitative signals that can be used to inform our behavior, once we learn to read them. "When you have small, distributed battery-powered sensors, you want to collect all biometric data. Taking video of people in motion, and then analyzing the video, seemed like a roundabout way to get data.

Technical giants guessed that there would be plenty of interest in something like a personal speedometer, a wearable instrument that displayed how far you'd gone and your average speed. So they invented speedometer and placed it into a very small electronic device or clubbed with mobile phones. The data get flashed on mobile phones or to a sports/digital/electronic smart watch. It



provides multiple health related data instantly. Thanks to faster computers and clever mathematical techniques, the inventors are turning messy data from cheap sensors into meaningful information. "The real expertise is signal processing and statistical analysis,". Nike recently announced that its Nike+ system, one of the first personal speedometers, has been used by more than 2.5 million runners since its release in 2006.

At the center of this personal laboratory is the mobile phone. During the years that personal-data systems were making their rapid technical progress, many people started entering small reports about their lives into a phone.

Sharing became the term for the quick post to a social network: a status update to Facebook, a reading list on Goodreads, a location on Dopplr, songs to Last.fm, instant messaging on WhatsApp/Telegram/Hike, photos on Instagram, your breakfast menu on Twitter. "People got used to sharing,". "The more they want to share, the more they want to have something to share." Personal data are ideally suited to a social life of sharing. You might not always have something to say, but you always have a number to report.

An elaborate setup is no longer necessary, because the phone already envelops us in a cloud of computing. This term, "the cloud," has some specialized meanings among software architects, but fundamentally the cloud is just a poetic label for the global agglomeration of computer resources — the processors, hard drives, fiber-optic cables and so on — that allow us to access our private data from any Internet connection. We entrust all kinds of things to the cloud: our mail and our family photographs; the places we go and the list of people we call on the phone.

The goal of self-tracking isn't to figure out something about human beings generally but to discover something about yourself. Their validity may be narrow, but it is beautifully relevant. Generally, when we try to change, we simply thrash about: we improvise, guess, forget our results or change the conditions without even noticing the results. Errors are possible in self-tracking and self-experiment, of course. It is easy to mistake a transient effect for a permanent one, or miss some hidden factor that is influencing your data and confounding your conclusions. But once you start gathering data, recording the dates, toggling the conditions back and forth while keeping careful records of the outcome, you gain a tremendous advantage over the normal human practice of making no valid effort whatsoever.

Electronic trackers have no feelings. They are emotionally neutral, but this very fact makes them powerful mirrors of our own values and judgments. The objectivity of a machine can seem generous or merciless, tolerant or cruel. Often, pioneering trackers struggle with feelings of being both aided and tormented by the very systems they have built.

People are not assembly lines. We cannot be tuned to a known standard, because a universal standard for human experience does not exist. Trackers focused on health want to ensure that medical practitioners don't miss the particulars of their condition; trackers who record their mental states are often trying to find their own way to personal fulfillment amid the seductions of marketing and the errors of common opinion; fitness trackers are trying to tune their training regimes to their own body types and competitive goals, but they are also looking to understand their strengths and weaknesses, to uncover potential they didn't know they had. Self-tracking, in this way, is not really a tool of optimization but of discovery, and if tracking regimes that we would once have thought bizarre are becoming normal, one of the most interesting effects may be to make us re-evaluate what "normal" means.



सेवानिवृत्त कमाण्डेन्ट बने प्रेरणास्त्रोत



दिनांक 25 अक्टूबर 1949 को गॉव हिरनौल, जिला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश में जन्मे श्री धरमपाल त्यागी, मेरठ विश्वविद्यालय से स्नातक (विज्ञान) तक पढ़ाई पूरी करने के बाद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती हुए एवं केन्द्रीय वॉलीबॉल टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए सन् 1981 में अखिल भारतीय पुलिस वॉलीबॉल चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। सेवा के दौरान इनको महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क, सराहनीय सेवा पदक एवं सन् 1988 में वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक से अलंकृत किया गया। अपनी उत्कृष्ट सेवा, ईमानदारी एवं समपर्ण की भावना से श्री त्यागी कमाण्डेन्ट के पद पर पहुँच कर 31 अक्टूबर, 2006 को सेवानिवृत्त हुए एवं केरिपुबल से सेवानिवृत्त होते ही श्री त्यागी ने एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा में उप महाप्रबन्धक (सुरक्षा) के पद पर नियुक्त हुए। सेवा निवृत्त होने के बाद भी श्री त्यागी ने 65 वर्ष की आयु में जापान के किटा–कामी में एशियन मास्टर एथलेटिक चैम्पियनशिप– 2014 शॉट–पुट (गोला–फेंक) स्पर्धा में नौवां स्थान प्राप्त कर देश और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का नाम रोशन किया। 66 वर्ष की आयु में भी असीम इच्छा शक्ति के कारण श्री त्यागी ने विश्व स्तर पर फ्रान्स के लियोन मे विश्व मास्टर एथलीट चैंपियन टूर्नामेन्ट–2015 शॉट–पुट स्पर्धा में सोलहवां स्थान प्राप्त किया एवं राष्ट्रीय स्तर पर गोवा मे आयोजित मास्टर एथलेटिक चैंपियनशिप–2015 शॉट–पुट (गोला–फेक) स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीत कर अपने कीर्ति की पताका फहराई । इससे यही साबित होता है कि अगर व्यक्ति में हौसला हो तो उसे उम्र सेवानिवृत्त नहीं कर सकती है। श्री धरमपाल त्यागी केरिपुबल से सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत हैं ।



शाम हो गई, अभी तो घूमने चलो न पापा,
चलते चलते थक गई मैं, कंधे पे बिठा लो न पापा
अँधेरे से डर लगता है, सीने से लगा लो न पापा,
मम्मी तो सो गई,
आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा
स्कूल तो पूरी हो गई,
अब कॉलेज जाने दो न पापा
पाल पोस कर बड़ा किया,
अब जुदा तो मत करो न पापा
अब डोली बिठा ही दिया जो,
आँसू तो मत बहाओ न पापा
आपकी मुस्कराहट अच्छी है,
एक बार मुस्कराओ न पापा
आप ने मेरी हर बात मानी,
एक बात और मान जाओ न पापा
इस धरती पर बोझ नहीं मैं
दुनियॉ को समझाओ न पापा
ये बात बड़ी सच्ची है
सब को बतलाओ न पापा।

सुशील कुमार
निरीक्षक/हिंदी अनुवादक
छत्तीसगढ़ सेक्टर, रायपुर

AIMING HIGH





SI/M Sharwan Kumar
GC, CRPF,
Pinjore (haryana)

As the result of my selection for participating in IMF Mixed Expedition to peak Mt. White Needle (6600 M) & Pinnacle (6930 M) in Zanskar region, J&K wef 12/09/2015 to 10/10/2015 by Indian Mountaineering Foundation, New Delhi, I was detailed for participating in said expedition. Thereafter, I left GC , CRPF, Pinjore (Haryana) on 11/09/2015 (AN). Since, the expedition has been organized on the directions of Chief Minister of Jammu & Kashmir State, the expedition was jointly organized by the Indian Mountaineering Foundation, New Delhi and Department of Tourism, J & K. I was only person of CRPF, who was selected for said expedition.

Mt. White Needle (6600 m) is situated in Zanskar Region of Jammu & Kashmir. This peak is adjacent to Mt. Nun (7135 m) and no one climbed it for the past 26 years since 1989 due to very arduous and steep climb over ice. I left IMF , New Delhi for Kargil (J&K) with 14 members of team, who belong to other departments & states. The expedition was flagged-off by Secretary, IMF, New Delhi on 15/09/2015 . We reached Srinagar on 16/09/2015 and from there were flagged-off by Secretary Tourism Jammu & Kashmir on 17/09/2015. Thereafter, I reached Shapat Nala, Kargil on 19/09/2015. After climbing seven hours, we reached Base Camp at 14.30 hrs on 21/09/2015.

The Base Camp was situated at the height of 14907 Ft and snow was falling when we reached the camp, We left Base Camp on 23/09/2015 and returned back to Shapat nala again due to heavy snow-fall & bad weather. When, snow-fall stopped in the morning of 24/09/2015 we again started climbing and reached base camp on 25/09/2015. On 28/09/2015, we started climbing towards Camp-I with equipments & personal items. After climbing for five hours on rock and snow, we reached Camp-I (17232 ft) and erected tents. The way to Camp-II was very difficult & steep. After climbing continuously for nine hours (1500 m) steep with the help of rope/Zumar, we reached Camp-II (19140 ft).

We were blessed with good weather, so we started our journey towards top of Mt. White Needle (6600 m) at 03:00 am on 02/10/2015 . The route towards the top of Mt. White Needle was very tough with many crannies and steep climb over ice. After climbing nine hours from Camp-I to Camp-II, the 60% energy of my body was exhausted .

I climbed up a snow ridge approximately 700-730m (climb like needle) by Zumar/rope leading towards top of Mt. White Needle. Weather started deteriorating suddenly and visibility became poor. Ultimately, I successfully reached the top of the Mt. White Needle (6600 M, 21700 Ft.) at 08:42(AM) on 02 October 2015 along with six other person. It is pertinent to mention here that out of 15 members, only 7 could reach on the top of destination. I stayed at the top of Mt. White Needle

for approximately 15-20 minutes and took some photographs. Thereafter, I climbed and reached Camp-II at about 01:00 pm and Camp-I at about 05:00 pm on same day and next day i.e. 03/10/20115, we reached Base Camp safely and further returned to Kargil on 05/10/2015 and reached Delhi on 08/10/2015, where we were flagged-in by the President, IMF, New Delhi on 10/10/2015.

Earlier I successfully completed Basic and Advanced Mountaineering Course from Himalyan Mountaineering Institute, Dargeeling (WB) I have climbed "Renok Peak" (16500 ft.) in 2012, Kabru Dom Camp-I (17000 Ft) West Sikkim in 2013 and Mt. Stok Kangri (6153 M, 20182 ft), Leh(Ladakh) on 08/07/2014.





Leading the Women's Charge in Football :

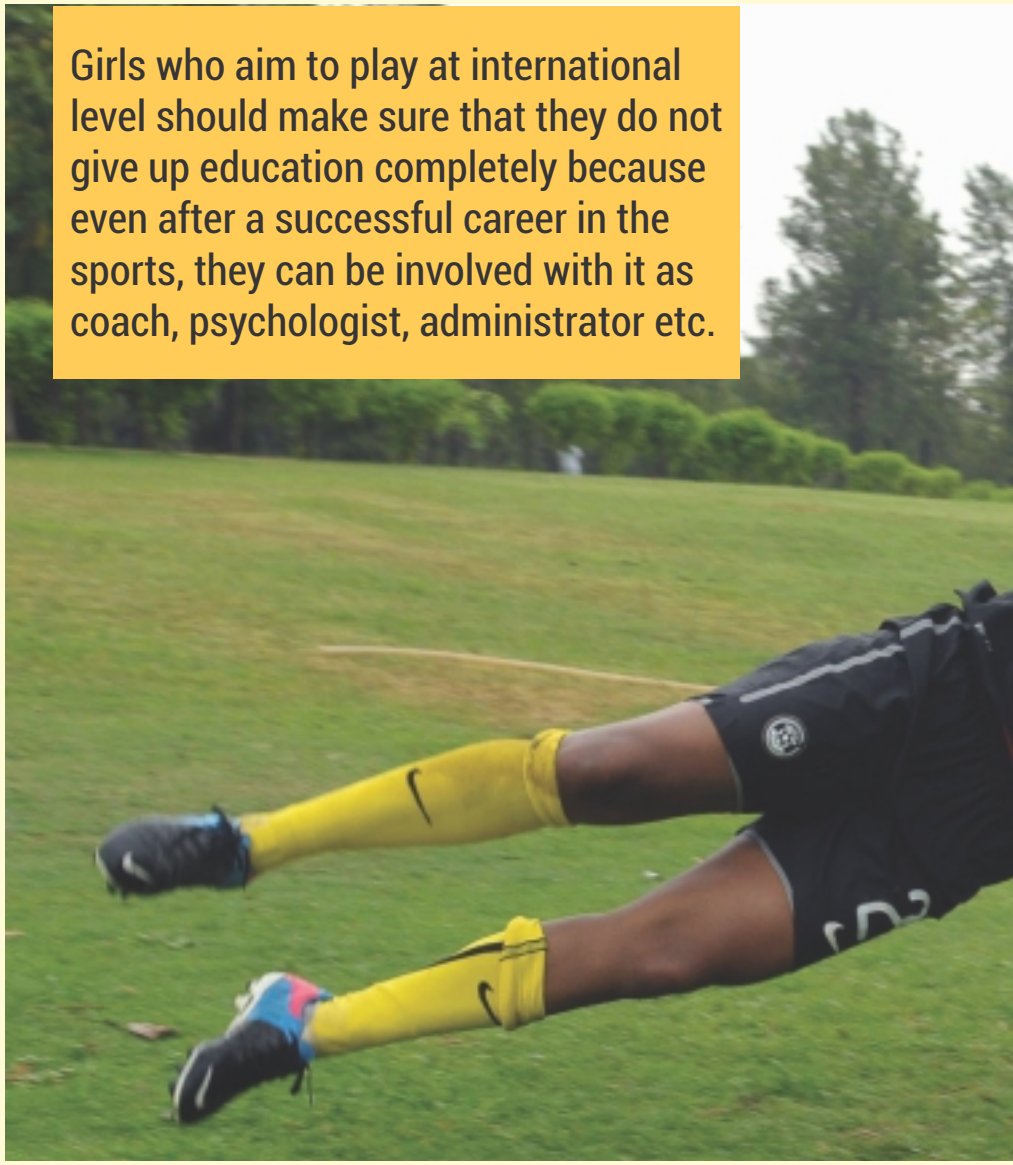
CRPF has had a long-standing tradition of producing national level athletes and a recent addition to an already illustrious list is that of Miss Aditi Chauhan. Born to DIGP, AV Chauhan and having been a part of the CRPF family for the past 22 years, Aditi Chauhan has risen from the shadows of the male sportsperson in the country and has reached the elite level of playing for the country and representing the nation in various International events.

Aditi recently became an international figure, when she became the first Indian to play for West Ham club, in the Premier League in UK. By doing so, she has made the whole country proud.

She has been the Indian National Women's Football team's first choice goalkeeper for the past six years and has been representing the nation in various International tournaments. At the age of 17, she was selected for the under-19 Indian National Football team, and played her first tournament at the U-19 AFC Qualifiers at Kuala Lumpur in 2008. After sustained efforts and much hard work, she went onto become a part of the Senior Indian National Football team, where she has played for the past 6 years. She was the keeper of Women's team that won SAFF Championship in 2012. Her latest endeavor with the National team was the Incheon Games in South Korea in 2014 where the team rubbed shoulders against footballing powerhouses such as South Korea, Thailand and Maldives.

She says, "Excitement, Enthusiasm, Emotion and Dedication defines this game and my love for it. I don't really remember exactly when it happened but my love for football dates back to my childhood and gradually it grew to become more than just a game for me."

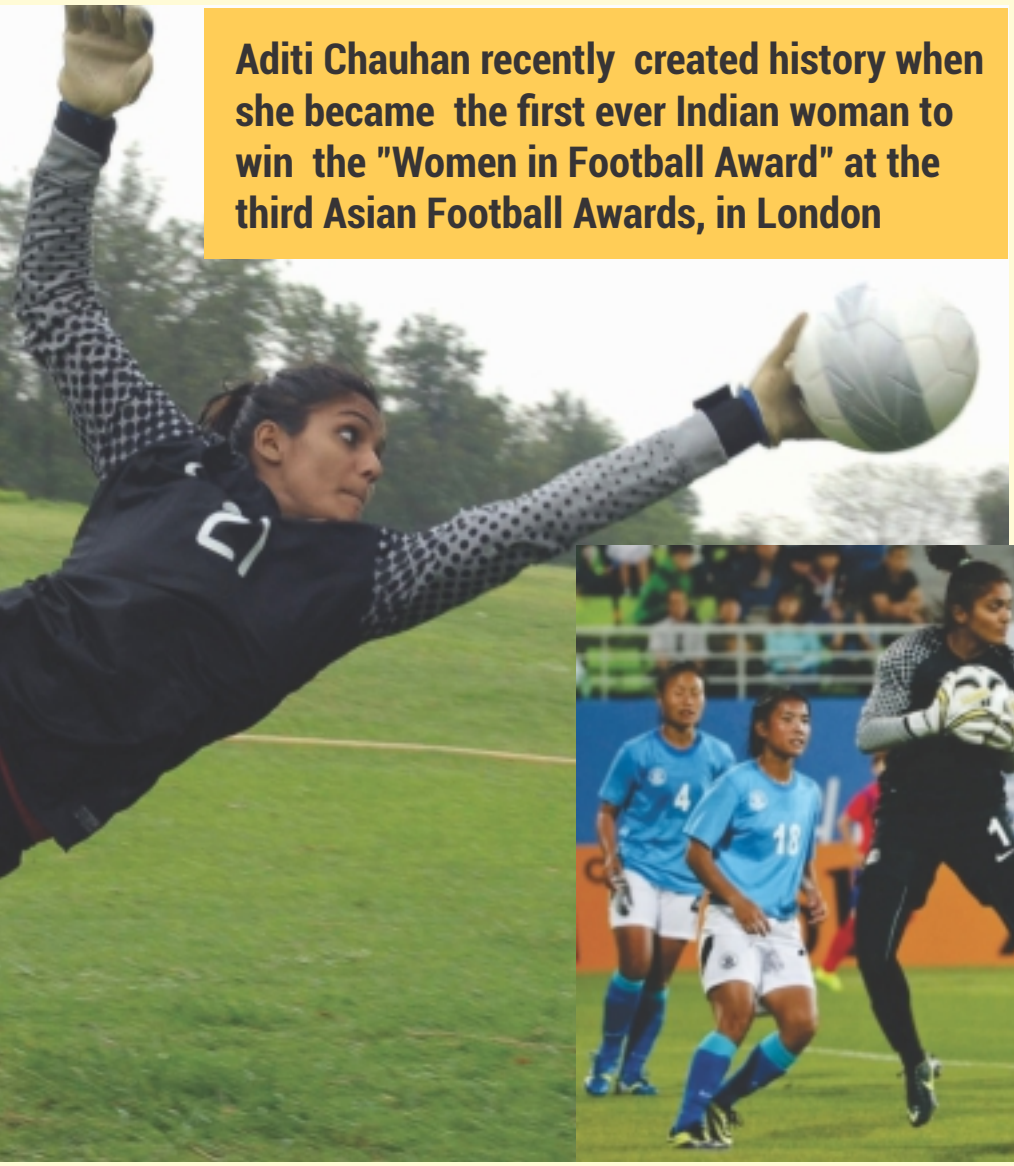
Girls who aim to play at international level should make sure that they do not give up education completely because even after a successful career in the sports, they can be involved with it as coach, psychologist, administrator etc.



Aditi has always strived to maintain a balance between football and education. She firmly believes that having a strong educational background is necessary to have a strong post-player career. She secured above 90% in both her tenth and twelfth grades and also has a B Com degree from Delhi University. Also, after spending numerous years with the National team and with an eye on her future goal of being associated with the football administrative setup in India, she decided to pursue higher education in Sports Management at Loughborough University- UK, where she continued to play for her

ADITI CHAUHAN

Aditi Chauhan recently created history when she became the first ever Indian woman to win the "Women in Football Award" at the third Asian Football Awards, in London





University and now playing for West Ham, in the Premier League.

Aditi has also gained administrative experience while interning with All India Football Federation, Libero Sports and Decathlon, UK. She continues to build her experiences by volunteering for sports events in UK- a recent addition to her experience being volunteering for a Manchester United match.

Aditi firmly believes that it's important for all girls who love sports, to keep working hard and continue playing. Her advice to all the aspiring sportswomen, “Girls who aim to play at the international level should make sure that they do not give up education completely because even after a successful career in the sports, they can be involved with it as coach, psychologist, administrator etc.”

With all the experience that Aditi has garnered during her career, both as a player and now as an administrator, she is sure to make big and become a part of the selected few who are working tirelessly to promote football in India, right from the grassroot level. She intends to manifest and develop a plan to promote sportswomen, not only in Football but also in other sports, with an aim of providing them opportunities for career development and progression.

Aditi's achievement is a reflection of hard work and dedication, a testimony to the saying that nothing is impossible. It gives me immense pleasure as I sit down and write about her with a hope that her story might inspire someone who reads this article and that would indeed be a great blessing for all us here.

Dr. (Shivani Chauhan)
w/o Sh. A.V. Chauhan, DIG (Pers)

NET NEUTRALITY



Karmveer Singh Yadav
Dy. Comdt
Principal, CIT, Bangalore



What is Net Neutrality : It is a principle that says internet service provider (ISP) should treat all data traffic and content on their network equally.

All the data on internet flows in the form of bits i.e. bits of 0 and 1. So proponent of net neutrality says that all these bits of traffic are equal and ISP should not differentiate and discriminate these bits of data based on their content, sender, user, usage, website etc. by either charging a fee for acting as its carrier or by incorporating any technical qualifications.

So the essence of net neutrality can be summarized in the following ways:

- All sites must be equally accessible.
- The same data cost to access a site.
- No zero rating.
- ISP's do not favour one application over another.

Telecom companies and Internet Service Provider (ISP) like Airtel, Vodafone, Reliance etc. are service providers who already control pipes that carry internet up to end user and can further control:

(a) what you access.

(b) How fast you access.

(c) How much you pay to access the content and services.

Zero Rating : It is the practice of mobile network operator and internet service provider not to charge end customer for data used by specific application or internet service through their network. So its quite obvious that end user will prefer such website over others which are fast and cost effective.

Importance Of Net Neutrality : The internet is now a level playing field. Anybody can start a website, stream music or use social media with the same amount of data they have purchased with a particular ISP.But in the absence of net neutrality, your ISP may favour certain websites over others for which you might have to pay extra. Website A might load faster than website B because your ISP has a deal with website A that website B cannot afford. Some application will become faster than other and finally it could end the very feature of internet.

In fact, it is the neutral internet that has made it possible for countless startup ,from the Google to the Flipkart, to dream and act big.

RECENT ISSUES:

1) **Airtel Zero:** Airtel introduced in april, the airtel zero plan which promises preferential treatment for websites that agree to sign up for the marketing platform by paying a fee.

2) **Internet.org :** Facebook – Promoted Internet.org (Now

rebranded as "Free Basics") aims at providing free internet service by offering 30 websites, without any charge on mobile data accruing to the ultimate user. Thus discrimining the access of scores of other websites.



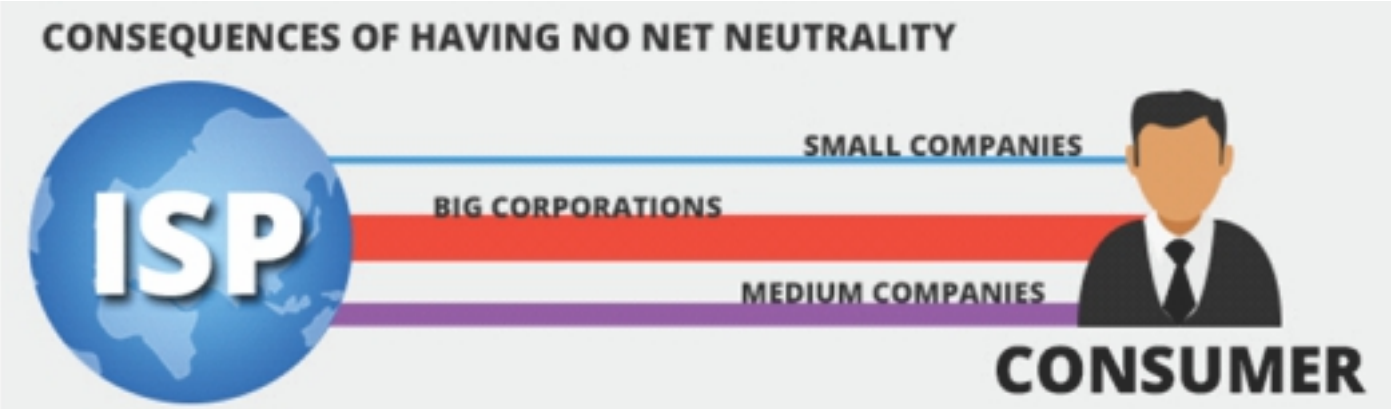
Telecom Companies View: Telecom companies do not like the way the applications are riding on their network for free. The companies complain that voice-calling and messaging applications are cannibalizing their business. Also, it is they only who have to invest billions in getting access to spectrum and build networks and also adhere to regulations.But it is also a fact that increased data consumption due to OTT services gives huge benefit to telecom companies .

India's Response : Recently Telecom Regulatory Authority of India (TRAI) released a draft consultation paper seeking views from the industry and the general public on the needs for regulation for Over-The-Top (OTT) players, security concerns and network neutrality. Thereafter DoT committee in its report suggested a new law incorporating principle of net neutrality. It has recommended allowing legitimate traffic management, but said 'exploitative or anticompetitive traffic management', 'application specific control within the Internet traffic' and traffic prioritisation on paid basis must not be allowed.

Global Response:

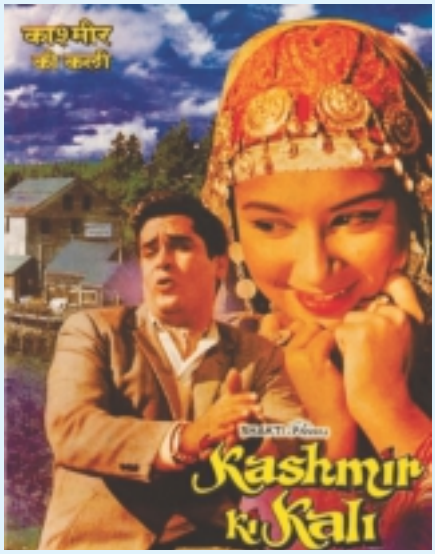
1. In 2014,Chile banned zero rated scheme.
2. The Federal communication commission of USA called for strong rules to enforce net neutrality and suggested that there should be no blocking, No throttling and no paid prioritization.

Finally, The debate must address the tension between two apparently conflicting goals i.e. the importance of maintaining a neutral net and need to ensure greater digital inclusion of underprivileged by providing free or partially subsidized internet services to ensure global access of the internet.



KASHMIR : AN UNFORGETTABLE EXPERIENCE

Gar firdaus, ruhe zamin ast,
hamin asto, hamin asto, hamin ast
If there is ever a heaven on earth,
it's here, it's here, its here.





Vivek Sahay,
IG Eastern Sector, Kolkata

You just cannot miss Kashmir- a crown as well as a thorn for India. Despite the bloodiest communal carnage in history, the Indo-Pak partition occasioned no major dispute between the two countries except Kashmir - Pakistan felt that the reason for which Hyderabad was integrated with India should have been good enough for Kashmir to go with them. The Kashmir problem has accounted for huge armies and defence expenditure on both sides, and the angst of losing out Kashmir probably drove Pakistan into the hands of its army. Kashmir gave us two full fledged wars and much cause for celebration and chest thumping which sustained us even during the first decade of resumption of cricketing ties from 1977 when we lost more than we won on the cricketing grounds.

Kalhan's Rajtarangini has chronicled the region's history. The climate of Kashmir has drawn pilgrims, tourists, emperors and Prime Ministers over the years. Its fruits are famous- apples, peaches, plums, apricots and many varieties of berries and nuts which you probably read only in Enid Blyton books. Its saffron is prized, its gardens the most beautiful. Kashmir's natural beauty has been celebrated in the many films shot there and a beautiful woman in often called Kashmir ki Kali in this country obsessed with white complexion. In every household whose members had visited Kashmir, a photo of the lady of the house in her younger years, decked in a phiran, a head cover, and imitation jewellery is a prized frame displayed in the drawing room.

But somehow, the place would give me a miss. As a probationer at NPA, Hyderabad, I had two chances to visit the state - during the Bharat Darshan in 1989 and Army Attachment in 1990. But the state, sucked into militancy after the "rigged elections" of 1986, had become too hot for probationers to be taken on an excursion while the draw of lots sent me to Tenga Valley in Arunachal rather than Ahknoor where a few of my luckier colleagues were sent for the Olive Green attachment. My luck with Kashmir remained kind of mixed.

When I visited it for the first time in July this year, covering Srinagar, Traal and Pulwama in a straddle across two days, the beginning was a let down. The roads were about the worst I have seen on highways (and I am sure this has nothing to do with paucity of funds) in recent years. The apples in the miles of orchards I passed by hadn't ripened as yet. My CRPF colleagues were abuzz with the tales of unprecedented damage in the floods the previous September , a spurt in militant activities and



intensification of organised protests. The Indian government was not particularly popular, and the Kashmiris routinely indulged in pro-Pakistan posturing, though my gut feeling is that it was being done more to extract concessions than to secede



to Pakistan. People in general were warm and polite towards the tourists .

The following day when I alighted from the gondola at Gulmarg, I was clearly disappointed. Gulmarg in July is an absolutely over- rated destination, slush accompanies for over eighty yards after you alight and for the next eighty the dark and dirty material looks more like sludge than snow. I am sure, however, it would be a fantastic destination from November to May and I do intend to send my daughter for a skiing course there.

After the disappointment of Gulmarg, the sun shone on my luck even as it set across the Dal Lake which I hit just before 5.30 pm. It sank, a perfect ball of crimson without breaking, leaving a glow of red above, lovely to behold through silhouetted paddle boats, shikharas and houseboats. As darkness fell, the waters of the lake, over and under which the Zabarwan hills had been clearly visible a few moments ago, shimmered with the lights of the hotels on the Boulevard which clasps the Dal as well as that of the houseboats. A few Single Malts and a dinner of Rista and Goshtaba in the stimulating company of my Everesteer batchmate Atul Karwal completed a perfect day. A round of golf at Royal Springs the following morning provided the icing on the cake.

But luck once again did a flip flop when I took my family for our first ever family trip this month. Probably it was the wrath of Goddess for running away from her in Kolkata. The sky on 18th instant in Srinagar was overcast, we were denied the sun throughout the 250 odd steps climb to the Shankaracharya temple or the visit to Chashmashahi where my wife and daughter did the customary Kashmiri Ki Kali photo shoot. The Dal Lake appeared to be filled up with weeds, sad looking and empty houseboats, the shikara rides were fewer in a leaner tourist season, and there was much less hustle and bustle . The chinar, the state tree, whose leaves after the autumnal shedding are also used as a fuel in the kangris during winters, had yet to turn yellow and orange to rival the American or European Fall.

In the long series of disturbances that have come to punctuate life in Kashmir, one more was added during our stay. A boy, Zahid, conductor of a truck, succumbed to burn injuries sustained in a "politics of hate" attack at Udhampur by a gang led by an ex-constable. This triggered prolonged protests marred with severe stone pelting and were denied the pleasure of visiting Pahalgam where we had been booked for two nights in Pine and Peak, a resort by the Lidder and reputed to be as fine as any out there.







I was especially looking forward to visiting Aru Valley, recommended by my friend Zulfiquar, and a round of golf at the Pahalgam Golf Club.

During such flare-ups, the time after ten in the night to about seven in the morning is normally considered safer for travel since stone pelters rule the roost for the rest of the day but we were just unlucky. Contrast this with Bengal, whose poorer work culture rubs off on the bandhenforcers as well - they don't start their business before ten in the morning and are spent by six in the evening. A saving grace here is that tourists are not harmed, contrary to popular notions prevailing amongst many Indians.

Anyway, we were back in Srinagar and tolerated a bad first half with rain and indoors on the 19th. I spiced up the proceedings with some Kingfisher Ultra, but was still feeling low. Even the second ride on the Dal which included a visit to the CRPF guarded Kabootar Khana with an approach through a green carpet of water lilies did not cheer me up enough, though I did make a note of spending a night here during my next visit.

But Durga is a benevolent goddess. She cannot remain angry for long, and appeared before us in the form Bilal, seconded to me from Atul. Bilal suggested a visit to Sonamarg and make the best of a bad bargain. We brightened up and even the kids obliged by being ready to move by 8.30 in the morning.The Google will tell you that Sonamarg or Golden Meadow lies about 87 kms on the NH1D from Srinagar, is situated at the head of Sind River and is also a gateway to Ladakh. It is the base for treks to Harmukh range via Nichnal, Vishensar Lake, Gangabal and on to Nara Nag , and the pilgrim route to Amarnath Cave as well. Besides, it is famous for trout fishing.

The trouble with Kashmir is that its beauty has been so hyped up about being heaven on earth and being even more beautiful than Switzerland that comparisons can never be avoided. The stretch of first 50 kilometres was disappointing- the road was bad, the sides were strewn with garbage and construction debris or boulders stacked for repair. In the small hamlets in Ganderbal district we went through, the air was kind of melancholic- sad men in their phirens, their empty sleeves flailing about them; cheerless women covered in various types of headdress; the school children in smart uniforms but with solemn faces. The only saving grace was the Sind river that flowed to our right on its rocky bed through the ranges- here terraced, there dotted with small tin shacks of the shepherds who would have probably left them by now, the slopes somewhere clawed a dirty white as the scree piled up in heaps at mid height levels.



However, things brightened up after we crossed Manigam (which houses the Police Subsidiary Training Centre at Manigam and doubles up as a the base camp for Amarnath pilgrims) and reached Gund to have some much needed kahwa and the children to spend some time with furiously playful dogs of the local CRPF camp. The sun shone with its



friendliest welcome brightness , and about twenty kilometres before Sonmarg, the mountains just burst out to leave you awestruck. The taller mastiffs and crags glistened with fresh snow from the previous day's fall while downward streaks of snow was visible on most of the hills - in a couple of months, they would claim the slopes fully and even freeze the stream and block traffic to Leh. A few resorts by the river which one marked to drop in during our return and soon we were in Sonamarg. Sonmarg town is a ribbon of about a couple of kilometres in length and not more than two hundred meters in depth, dotted with two-three storied hotels cum restaurants, none very upmarket



but still bright and cheerful, and possibly welcoming.



But first things first. We had to go its most famous been- there- done- that place, the Thajawas valley, glacier and range. Up above a circular road that went past a golf course and the Sonamarg Club we motored to reach a small bazar where the horses and their keepers awaited the tourists with much anticipation. We , too, hired horses, though I can tell you it is not really needed. Hardly ten minutes on the horseback , negotiating two streams of freshly melted ice on a rough bed with a few driftwood strewn about , I was hit head - on with a site more beautiful than whatever I had seen previously in Lucerne or Mt.Titlis or at Interlaken way back in the summer of 2005.

The valley snaked for miles it seemed, the whiteness of its bed broken by moraines lying here and there hiding small rivulets, shrubs of itching plant and plenty of large boulders to rest and get clicked. Much nearer on both sides, the steep hills were white and green , the deodars standing in their full majesty, quite like inverted water sprouts , the slopes clearly defined against an azure sky. The snow line was rather tame and gradual in many stretches, much like the ones you could draw in your junior school drawing classes, but somewhere much afar, the gentleness was replaced by a craggy sharpness, as a series of thin peaks dotted the horizon- like icicles, in different shades of white and grey, hanging from the sky.

You can trust Indians to pollute places with impunity. It was no different here. The shacks, built around deserted cloisters of shepherds, were topped with dirty blue plastic sheets and offered kahwa , soft drinks and somewhere a fire for a cosy huddle but there no trash bins and people merrily flung the plastic cups and tetra packs. Some locals offered a sledge ride which I refused after my Gulmarg experience. We walked in as far as we could, negotiating small cracks of water that came up every fifty feet or so, listening to the locals talk about the places's most famous moment - the locale for shooting of Bajrangi Bhaijaan. We spent an hour there and returned to the bazaar, settled the money for the rides after a bit of amiable haggling, and journeyed down through verdant meadows where horses grazed lazily, their only visible activity being the occasional swishing of tails.

After placing order for lunch at Sonasar, we travelled to try our luck at trout fishing but the facility was closed for the day, then suffered a bit of jam around trucks which carried boulders of the Sind nullah, sped past the base camp of RR for the Amarnath pilgrims, along clear waters to spend time in the vast meadow and to take more snaps. Sonamarg was not done as yet. At Sonasar, the mutton khurumacooked in curd and ajwain and saunf was by far the most delicious of the dishes we had eaten in Kashmir, spread across plates of rogan josh, rista, goshtaba, tabak maaz and many others.

The following morning we spent at Dachigam (ten villages) National Park at the foothills of the Zabarwan Range . The highlights included a stroll in the garden whose walnut trees had recently been plucked, a walk on a path cushioned with pine needles up to the View Point , breathing in the sharp smell of pine, a visit to the lovely Meditation Point by a fast flowing mountain stream where Indira Gandhi spent long hours in silent contemplation and relaxation and a small stop at the trout breeding centre. We rounded our trip with some leisurely time at the impossibly beautiful Nishat gardens and some shopping before returning to the heavily guarded Srinagar airport.

Bilal hugged and left us only after extracting a promise of visiting Pahalgam the following year - the "unfinished agenda of Kashmir " he seemed to say. He had already organised a crate of the best Shopian apples for Rs. 500/- from the local mandi and assured to send more.

" Come during May, that is the best time ," he said before waving a final goodbye.



मेरा भारत महान



विश्व में भारत महान है, सी0आर0पी0एफ0 इसकी शान है।
इस बल के बहादुर जवानों से ही इसकी पहचान है।
इस बल के जवानों को अपनी बहादुरी पर बड़ा अभिमान है।
विश्व में भारत महान है, सी0आर0पी0एफ0 इसकी शान है।
भारत में उग्रवादी और नक्सलवादी इन बहादुर जवानों से हैरान है।
याद करो सरदार पोस्ट जहॉ हारा पाकिस्तान है।
विश्व में भारत महान है, सी0आर0पी0एफ0 इसकी शान है।
देश भक्ती जन सेवा इस बल का अभिमान है।
महात्मा गॉधीजी का दिया हुआ यह ज्ञान है।
इस बल की एकता अखण्डता और धर्म निरपेक्षता ही जान है।
यह हमें उपर वाले के द्वारा मिला हुआ वरदान है।
विश्व में भारत महान है, सी0आर0पी0एफ0 इसकी शान है।

सि0 / जीडी
जय प्रकाश शर्मा
के0 प्र0 महा0, ग्वालियर, (म0प्र0)



दबी आवाज

इस आजाद भारत में आजादी है, अमीरों की।
कितनी नंगी औरतें घूमती हैं गरीबों की।।

कभी हलवा और पूरी की दावतें कुत्तों को मिलती है।
वहीं मासूम बच्चे एक टुकड़े रोटी को तरसते हैं।।

किसी घर में खाना पकाने के लिए लकड़ी नहीं है।
कहीं मुर्दे चंदन पर जलाए जाते हैं।।

गरीबों की आवाज को दबाया जाता है।
अमीरों का जलवा हर जगह भुनाया जाता है।।

इस दुनिमा में काई अपना नहीं सब पराया है।
भूख के मारे लड़खड़ा कर गिर पड़ा तो लोग कहते हैं कि ''पी'' कर आया है।।

आओ कसम खाएं कोई अमीर नहीं और ना कोई गरीब होगा।
मिटा दे इस कुरीत को तो हर इन्सान एक दूसरे के करीब होगा।।

गूॅजेगी हर घर में एक ही आवाज ! देखो बदल गया समाज।
हर बच्चे का सपना साकार होगा, भारत की इस धरती पर एक नया संस्कार होगा।।

विकास की बुलंदी को छू लेंगे हम आओ बढ़ाएँ मिलाकर अपने कदम।
हे जननी, हे धरती, हे भारत माता, भर दो अथाह प्रेम अपने इन पुत्रों में।।

रच दे नया इतिहास इस दुनिया में, हे जननी हे धरती हे भारत माता।
भर दो अथाह प्रेम अपने पुत्रों में .....।।

सुरेन्द्र राम (उप कमां.)
गुप केन्द्र भोपाल (म.प्र.)

इतना होश है, जज़्बा है मेरे जवानों में



जसबिन्दर सिंह
उप निरी0 / जीडी
ई / 37 बटा. केरिपुबल

इतना होश है, जज्बा है मेरे जवानों में।
मातृभूमि के प्रति, रग–रग में भरी है मोहब्बत इन दिवानों में
क्या जंगल, क्या नालें, क्या पहाडी चलने से रोकेगें
हम तो वो काफिले है, जो कॉटो पर चले सो जायें विरानें में
इतना होश है, जज्बा है मेरे जवानों में ।।

बढते हैं जब कदम इनके, दुश्मन छुप जाते है म्यानों में
क्या गर्मी, क्या पानी, क्या हवा इन्हे रोकेंगें
कर्तव्य पर अड़िग रहतें हैं, घूप बारिस और तुफानों में।
इतना होश है, जज्बा है मेरे जवानों में ।।

उम्र भी आड़े आती नहीं इस बल के जवानों में
क्या बीस, क्या तीस, क्या पचास सब मिलकर चलेंगे
धरती को चीर पानी निकाल दें, इतना जोश भरा है सयानों में
इतना होश है, जज्बा है मेरे जवानों में ।।

मरने से नही डरते, खुश होते हैं बलिदानों में
क्या उग्रवाद, क्या नक्सलबाद, क्या देश के दुश्मन बिगाड़ लेंगे
हमेशा रहेगी शांति श्सेवा और निष्ठाश्के फरमानो में
इतना होश है, जज्बा है मेरे जवानों में ।।

प्रकृति

अरविन्द कुमार शर्मा
सि / जीडी
मुख्यालय / 100 आर.ए.एफ.

ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है मुझसे
ये कान के पास से गुजरती हवाओ की सरसराहट
ये पेड़ो पर फुदकते चिड़ियों की चहचहाहट
ये समुन्दर की लहरों का शोर
ये बारिश में नाचती मोर
कुछ कहना चाहती है मुझसे
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है मुझसे
ये चांदनी रात
ये तारों की बरसात
ये खिले हुए सुन्दर फूल
ये उड़ते हुए धूल
कुछ कहना चाहती है मुझसे
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है मुझसे
ये नदियों की कलकल
ये मौसम की हलचल
ये पर्वत की चोटियाँ
ये झींगुर की सीटियाँ
कुछ कहना चाहती है मुझसे
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है मुझसे

जीवन रहस्य

क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो
क्यों व्यर्थ किससे डरते हो,
कहा है गीता में श्री कृष्ण ने,

है नही है कोई शक्ति ऐसी
जो टूटे दरखत की पत्ती को
लगा दुबारा दे, फिर दरखत पर,

है नही कोई मिट्टी ऐसी
जो चूर चूर हो वैसी मिट्टी
जैसी थी वो वैसी मिट्टी,

प्रेम, प्रार्थना वक्त सिखाये,
वेदना संवेदना वक्त समझाये,
ना समझो, तो अंतरग दुखाये,

मिट्टी के पुतले पर क्यूं इतराये
भूत के तथ्यों से मन दुखाये
आगे की सोचकर आज गंवाये

पल पल स्मरण छूटा जाये
वक्त का पहिया चलता जाये
फिर ये जीवन, रिक्त हो जाये

हे प्राणी–
तू मोह माया में अटका जाये

कुछ ना तेरे साथ में, जाये
सोच, की, स्मरण क्यों छूटा जाये

जब स्मरण को ध्यान लगाये
तो आनन्द अनूभूति खुद ही आये
सन्तोष की अग्नि भीतर आये
सन्तोष की अग्नि भीतर आये।

दुर्गा प्रसाद
कमाण्डेंट, 05 बटालियन

मोहन से महात्मा



मुनेश कुमार
सउनि./मंत्रा
ग्रु.के.–दो अजमेर

मोहन सीधा–साधा, दुबला–पतला, शर्मीला एवं संकोची विद्यार्थी था और पढ़ने–लिखने में भी बहुत ही साधारण। मोहन को जिस विद्यालय में पढ़ने के लिए भेजा गया, वहॉ वह गिनती, पढ़ाई और अक्षर ज्ञान के अलावा गालियॉ देना और तरह–तरह की शैतानियॉ करना भी सीख गया।

एक दिन मोहन अपने साथियों के साथ घूमने के लिए निकला। सभी साथी बड़े मजे से गुजराती में गाली गाने लगे।

"एकड़े एक, पापड़ सेक
पापड़ काच्चो मास्ट मारो"

एकाएक उधर से मोहन के स्कूल मास्टर साहब (टीचर) आ गए। सभी साथी भाग गए, लेकिन मोहन डर के कारण वहीं बैठा रह गया। मास्टर साहब गरजकर बोले, "क्यों मोहन, यहॉ क्या हो रहा है?"

मोहन की आवाज गले में ही अटक कर रह गई।

"स्कूल से भागकर यहॉ गालियॉ बकी जा रही है।" इतना कहकर मास्टर जी ने मोहन के कान उमेंठकर दो थप्पड़ लगा दिए। मोहन क्षोभ के कारण रो पड़ा। मास्टर जी ने कहा, "बेटे! तुम्हारी संगति बुरी हो रही है, तुम्हें बुरे लड़कों के साथ नहीं रहना चाहिए। क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम किसके बेटे हो?"

मोहन चुपचाप सिर झुकाकर मास्टरजी की बात सुनता रहा।

"मोहन तुम्हारे पिता दीवान करमचन्द अपनी कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्रभक्ति के लिए प्रसिद्व हैं, अतः तुम्हें भी उन्हीं के रास्ते पर चलकर आदर्श विद्यार्थी बनना चाहिए।"

मोहन के मासूम हृदय पर मास्टरजी की बातों का गहरा प्रभाव पड़ा। उसने अपनी गलतियों पर विचार किया और इस बात को महसूस किया कि मास्टर जी सही कह रहे हैं। उसने मास्टर जी से हाथ जोड़कर क्षमा मॉगी और प्रतिज्ञा की कि भविष्य में कभी भी किसी को गाली नहीं देगा।

इस घटना के बाद मोहन ने अपने जीवन में सत्य, अहिंसा, सेवा, त्याग, सादगी, विनम्रता और नीति–नियम का रास्ता अपनाया और यही मोहन (मोहनदास करम चन्द गांधी) 'मोहन से महात्मा' बनकर बापू, गांधी और राष्ट्रपिता कहलाए।

सफलता का अर्थ



शैलेंद्र सिंह
सहा.कमा.

आधुनिक युग मे उपभोगवादी संस्कृति के पनप जाने से लोगों की मानसिकता में सफलता का अर्थ है, अधिक से अधिक धन कमाना, भौतिक सुख संपदा एकत्रित करना और लोकप्रियता हासिल करना, लेकिन महान विचारकों, दार्शनिकों एवं सफल उद्यमियों का नजरिया इससे बिलकुल हटकर है और उनके अनुसार सफलता का अर्थ है – प्रतिदिन उपने लक्ष्य को पाने की चेष्टा करना, जिसे हमने अपनी रूचि से चुना है, चिंता रहित जीना और दूसरों के हित में उपयोगी बनना ही वास्तविक सफलता है ।

संसार का सफल व्यक्ति वह है जिसकी सफलता सबसे सस्ती है सफलता एक प्रकार का एहसास है इसे महसूस किया जा सकता है, इसका सीधा संबंध मन की शांति से होता है । वास्तव मे सफलता और संतोष (मन की शांति) दोनों साथ साथ चलते है यदि हम अपने कार्य की संपन्नता से संतुष्ट है तो यह हमारी सफलता है।

सफलता यूं ही आपकी पकड़ में नहीं आती , इससे पहले आपको असफलता से सामना करना पड़ता है , उससे कुछ सीखना पड़ता है, मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, गलतियों को सुधारना पड़ता और ना जाने कितनी बार गिरकर फिर उठना पड़ता तभी सफल व्यक्ति का यह मानना है की हर सफलता की कहानी के पीछे छुपी होती है असफलता की कहानी ।

सफलता पाने का मूल मंत्र है शुभ विचारों का सदृढ इच्छाशक्ति से पोषण करना, सफलता दृढ इच्छाशक्ति का दूसरा रूप है, आवश्यकता केवल मन को झकझोरने की है, सफलता आपकी होगी यह निश्चित है ।

अहंकार से अवनति



सत्येन्द्र सिंह
निरीक्षक/हिन्दी अनुवादक

सफल मनुष्य कभी अंहकारी नही हो सकता एवं अंहकारी मनुष्य अगर सफल भी हो जाए लेकिन अंतोगत्वा असफलता को प्राप्त करता है। आज दुनिया में जितने भी मनुष्य जैसे भगवान महावीर, महात्मा गौतम बुद्ध, श्री रामव्राभ – स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गॉधी, महान वैज्ञानिक एल्बर्ट आइस्टीन, महान दार्शनिक स्किन इत्यादि व्यक्तियों को अंहकार छु तक नही पाया। मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी होती है उसका अहंकार। अहंकार प्रगति का सबसे बड़ा बाधक तत्व है। जो साधक विनम्र नही होता वह सत्य को नही प्राप्त कर सकता। अहंकार में वशीभूत व्यक्ति यह सोचता है कि मैं झुक गया और सह लिया तो लोग मुझें छोटा एवं कमजोर समझकर मेरी उपेक्षा करेंगे परन्तु वास्तविकता ऐसी नही है। नम्र एवं विनीत होना कायरता या कमजोरी की नहीं, महानता की निशानी है और इसी से जीवन की सार्थकता उजागर होती है।



धन, वैभव और सत्ता के कारण मनुष्य अभिमानी और निरंकुभ हो जाता है, इतिहास इस सत्य का साक्षी है। हिरण्याकश्यप, कंस, रावण, हिटलर, सिकन्दर, नादिरशाह, जंगेज खां, औरंगजेब, इदी आमीन एवं सद्धाम हुसैन आदि निरंकुश शासक के नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज है जिनके अन्याय की गाथाओं को कभी भुलाया नही जा सकता। यह कथन सत्य है कि अपनी अज्ञानता का अहसास होना ज्ञान की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है। ठीक इसी तरह अहंकार से मुक्ति पाएं बिना जीवन को सफल नही बनाया जा सकता।

महापुरूषों का कथन है कि झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नही होता बल्कि वह बड़ा एवं मजबूत होता है। विनम्र एवं सत्यशोधक दृष्टि का ही परिणाम है कि महापुरूषों पर अहंकार हावी नही हो पाता है। आम से लदी हुई डाल झुकी हुई होती है। जो व्यक्ति लचीला होता है, विनम्र होता है, समय पर झुकना जानता है, उसे कोई तोड़ नही सकता, झुका नही सकता। जिस व्यक्ति का अहंकार पुस्ट होता है, वह ग्रहनशील नही हो सकता। जो ग्रहनशीन नही होता, वह प्रयास करने पर भी कुछ नही पा सकता। क्योकि कुछ न जानने पर भी वह स्वंय को पूर्ण मानता है और यही अंहकारमय पूर्णता विकास की सबसे बड़ी बाधा है। खुद को खुश रखने के लिए भी नम्र एवं सहनशील बनना जरूरी है।

"अतीत पर ध्यान केन्द्रित मत करो, भविष्य का सपना भी मत देखो, वर्तमान क्षण पर ध्यान केन्द्रित करो।"

संसार की रीत



एक नगर में एक मशहूर चित्रकार रहता था। चित्रकार ने एक बहुत सुन्दर तसवीर बनाई और उसे नगर के चौराहे में लगा दिया और नीचे लिख दिया कि जिस किसी को, जहाँ भी इस में कमी नजर आये वह वहाँ निशान लगा दे। जब उसने शाम को तसवीर देखी उसकी पूरी तसवीर निशानों से खराब हो चुकी थी। यह देख वह बहुत दुखी हुआ । उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करे वह दुःखी बैठा हुआ था। तभी उसका एक मित्र वहाँ से गुजरा उसने उस के दुःखी होने का कारण पूछा तो उसने उसे पूरी घटना बताई । उसने कहा एक काम करो कल दूसरी तसवीर बनाना और उस मे लिखना कि जिस किसी को इस तस्वीर में जहाँ कहीं भी कोई कमी नजर आये उसे सही कर दे। उसने अगले दिन यही किया । शाम को जब उसने अपनी तसवीर देखी तो उसने देखा कि तसवीर पर किसी ने कुछ नहीं किया। वह संसार की रीत समझ गया।

''कमी निकालना, निंदा करना, बुराई करना आसान, लेकिन उन कमियों को दूर करना या समाधान निकालना अत्यंत कठिन होता है'' .....!!!



जादू का काम करता है धन्यवाद



संजय पासवान
सहा. उप नि/मंत्रा

हर किसी की जिंदगी में कई ऐसे क्षण आते हैं , जब हमें दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है। ऐसे में शिष्टाचार हमें यह सिखाता है कि सहायता का दामन थामने में ना हिचकिचाएँ, साथ ही सहायक के प्रति कृतज्ञता दर्शाएँ और उसको पूरे दिल से धन्यवाद करते हुए उसे एहसास कराएँ कि सचमुच यदि वे नहीं होते तो आप परिस्थितियों से जूझने में असमर्थ होते । आपका अपनत्व और प्रेम से भीगा छोटा–सा आभार आपको हर दिल अजीज बना देगा। वो जमाने लद गए जब लोगों से जोर–जबर्दस्ती से काम करवा लिया जाता था। धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठान हो या घर में मित्रों, परिवारजनों का जमाबड़ा हो, सभी कार्या में एक दूसरों की मद्द ली जाती है, इसलिए उन्हें एहसास कराना निहायत जरूरी होता है कि उस समय उनका साथ आपको किस हद तक परेशानी से बचाएगा । कुछ लोगों को आपने कहते सुना होगा, काम करते हैं तो उन्हें पैसा भी तो देते है ? तारीफ करके उन्हें सिर पर थोडे ही बिठाना है। व्यवहारिकता के धरातल पर ऐसी सोच सही है, लेकिन मानवता के दृष्टिकोण से सोचा जाए तो पारिश्रमिक तो आपने उसके काम का दिया , लेकिन निष्ठा का मोल क्या पैसे से चुकाया जा सकता है। रिश्तेदार और दोस्त तो बाद में पहुँचते हैं, बुरे वक्त में सिर्फ सहकर्मी ही काम आते है। मान लीजिए आपको ऑफिस से अचानक छुट्टी लेनी पड़ जाए तो ऐसे में जिस भी सहकर्मी को आप अपना काम सौंप कर जा रहे हैं, उसे बाद में धन्यवाद जरूर कहें। यदि आप ऐसा नहीं करते, तो आप गलत है। यदि आप दो शब्द कहकर अपना आभार प्रकट करते हैं, तो आपके शब्द जादू का काम करेंगे और भविष्य में भी आपका किसी भी तरह का काम आसान होगा । इंसान के भावनात्मक सहयोग के लिए धन्यवाद जरूर बोलें, यकीन मानें यह जादू का काम करता है।

महानिदेशक के दौरे

30 बटालियन - तेजपुर, असम



श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक क्वार्टर गार्ड पर सलामी लेते हुए



महानिदेशक महोदय भवन का उद्घाटन करते हुए

ग्रुप केन्द्र, राँची



प्रशासनिक भवन का शिलान्यास करते हुए महानिदेशक



अधिकारियों एवं सिविल इंजीनियर के साथ महानिदेशक महोदय

2 बटालियन - सुकमा, छत्तीसगढ़



हैलीपेड ग्राउन्ड पर महानिदेशक महोदय द्वारा उच्चाधिकारियों से चर्चा



महानिदेशक महोदय द्वारा उच्चाधिकारियों से विचार विमर्श

महानिदेशालय की हलचल

हिंदी दिवस समारोह



दिनांक 14/9/2015 को महानिदेशालय, केरिपुबल, मुख्यालय में हिंदी दिवस समारोह और राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक द्वारा की गई। सर्वप्रथम महानिदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई। तत्पश्चात महानिदेशालय में हिदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को महानिदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। बल स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए मध्य प्रदेश सेक्टर को राजभाषा रनिंग शील्ड एवं द्रुत कार्य बल सेक्टर को द्वितीय स्थान के लिए प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर महानिदेशक महोदय ने कहा कि हिन्दी में काम करना आसान है और सभी प्रकार के सरकारी कार्यो में इसका इस्तेमाल आसानी से किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमारे सभी अधिकारी हिन्दी में कार्य करने की पहल करें और अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें। इससे अधीनस्थ कर्मचारी स्वतः प्रेरित होकर अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करेंगे। इससे प्रत्येक स्तर पर हिन्दी का प्रयोग निरन्तर बढ़ सकेगा।

विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में विश्व में अत्यधिक प्रगति हुई है जिसके फलस्वरूप कम्प्यूटरों और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर हिन्दी में काम करने की सुविधा उपलब्ध हो गई है। इस प्रकार अब हिन्दी में काम करना और भी सरल हो गया है। सभी लोगों को इस सुविधा का लाभ उठाना चाहिए।

उन्होंने सभी से अपील की, कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में निपटाएं तथा राजभाषा हिन्दी का गौरव बढ़ाएं।



स्वच्छ भारत अभियान



स्वच्छ भारत अभियान के तहत सफाई करते
श्री आर.पी.पाण्डेय महानिरीक्षक (प्रशासन) एवं अन्य



स्वच्छ भारत अभियान के तहत सफाई करते
बल के कार्मिक

पुलिस स्मृति दिवस



अमर शहीद जवानों को श्रृद्धांजलि अर्पित करते हुए
श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक



अमर शहीद जवानों को श्रृद्धांजलि अर्पित करते हुए
श्री दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक



अमर शहीद जवानों के नाम को उद्घोषित करते हुए
महानिदेशक



महानिदेशक महोदय एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण
शहीदों को सलामी देते हुए

तीसरी अर्द्धवार्षिक लेखा कमेटी बैठक



अर्द्धवार्षिक लेखा कमेटी की बैठक के दौरान महानिदेशक एवं अन्य अधिकारीगण



अर्द्धवार्षिक लेखा कमेटी की बैठक के दौरान चर्चा करते अधिकारी गण

जागरुकता दिवस



जागरुकता दिवस पर शपथ दिलाते महानिदेशक महोदय



जागरुकता दिवस पर शपथ लेते वरिष्ठ अधिकारी गण

एकता दिवस



एकता दिवस पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए श्री दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक



एकता दिवस के अवसर पर शपथ लेते हुए कार्मिक

ग्रुप केन्द्र, लखनऊ : प्रशिक्षण कार्यक्रम



ऑनलाइन पेंशन भुगतान प्रशिक्षण कार्यक्रम पर व्याख्यान देते श्री भानुप्रताप सिंह, उप महानिरीक्षक



ऑनलाइन पेंशन भुगतान प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते हुए अधिकारी एवं अन्य कार्मिक

स्पेशल ड्यूटी ग्रुप का वर्षगाँठ समारोह



मेला का उद्घाटन करती हुईं श्रीमती रंजू त्रिपाठी अध्यक्षा, परिवार कल्याण समिति, स्पेशल ड्यूटी ग्रुप



मंच पर संगीत प्रस्तुत करते हुए श्री प्रभाकर त्रिपाठी, कमांडेंट स्पेशल ड्यूटी ग्रुप

176 बटालियन : विविध कार्यक्रम



शहीद दिवस पर शहीद सिपाही मंजूर अहमद की बहन को चेक प्रदान करते हुए कमांडेंट श्री जोगिंदर सिंह



स्वच्छ भारत अभियान के तहत सफाई करते हुए 176 बटालियन के अधिकारी एवं अन्य कार्मिक

ग्रुप केन्द्र, पुणे: गणेश महोत्सव



गणेश उत्सव का आयोजन के दौरान कलाकारों द्वारा संगीत कार्यक्रम की प्रस्तुति



कार्यकम का आनंद लेते अधिकारीं, जवान एवं उनके परिवार

78 बटालियन



वरिष्ठ नागरिकों के साथ कमांडेंट एवं अन्य अधिकारीगण

73 बटालियन



श्री के राजेन्द्र, महानिदेशक श्रीनगर पुलिस से जागृति एथलेटिक मीट २०१५ की ट्रॉफी प्राप्त करते ७३ बटालियन के खिलाड़ी

105 द्रुत कार्य बल : विविध कार्यक्रम



मैराथन दौड़ में भाग लेते १०५ द्रुत कार्य बल के जवान



१०५ द्रुत कार्य बल के जवानों द्वारा वृक्षारोपण

उपलब्धियाँ

EXCHANGES OF FIRE : CRPF ALL THE WAY

ASSAM 03/09/2015

On specific information, CRPF troops (129 Bn) alongwith Army & State Police carried out a joint search operation in the general area of Sumukha Nala, under PS: Kokrajhar, Distt: Kokrajhar (Assam) . During the operation a fierce encounter between troops and insurgents took place in which one NDFB(S) cadre namely Bhaigo Boro @ B.Bilaigra (22 years r/o Udalguri, Assam) was neutralized. One AK-47 rifle alongwith magazine, 32 rounds of live ammunition, two hand grenades and 18 empty cases of 7.62x39 mm were recovered from the encounter site.

ANDHRA PRADESH 15/09/2015

On specific information, CRPF troops (58 Bn) alongwith Grey Hounds and State Police laid an ambush near village- Venglapur, under PS-Tadvai, Distt: Warangal (AP). During operation an encounter took place in which two maoists were eliminated. One Carbine, one .303 Rifle and other incriminating items were also recovered from the spot.

JAMMU & KASHMIR 02/09/2015

On specific information, CRPF troops (92 Bn & 177 Bn) alongwith SOG and 32 RR carried out a joint operation in the general area of Ladoora under PS-Sopore, Distt: Baramulla(J&K). During the operation an encounter between security forces and terrorists took place in which one terrorist namely Riyaz Ahmad Mir (28 years r/o Sopore, J&K) was neutralized. One rifle man of 32 RR also attained martyrdom during the fierce encounter. One AK-47 rifle alongwith two magazines and 15 live rounds of AK-47 ammunition were also recovered from the incident site.

03/09/2015

On specific information, CRPF troops (98 Bn) alongwith State Police and troops of 6 RR and 9 Para (Army) carried out an operation in the general area of Hurdoona, under PS-Villgam, Distt-Kupwara(J&K). During the operation, terrorists fired at security forces which was retaliated. In this incident, 04 terrorists were neutralized. Four AK-47 rifles, one Claymore mine, 132 rounds of 7.62x39 mm ammunition, one UBGL, four UBGL grenades, two hand grenades, fourteen AK-47 magazines and one Pistol magazine were recovered from the possession of the slain

Recoveries during the month of September-October, 2015



Arms and ammunition recovered from Baskatwa forest, Gaya on 18/9/2015



Explosives seized from Rohtas, Bihar

terrorists. One Para trooper attained martyrdom and three got injured during the encounter.

11/09/2015

On specific information, CRPF troops (92 & 98 Bn) alongwith State Police and 21 RR carried an operation in the general area of Laribal, under PS Handwara, Distt: Kupwara(J&K). During operation an encounter between security forces and terrorists took place in which two terrorists were neutralized. Two AK-47 rifles, two Chinese Pistols alongwith magazines, one UBGL, 140 rounds of AK-47 ammunition, 12 rounds of Pistol ammunition, five magazines of AK-47 and other incriminating items were recovered from the possession of the slain terrorists. Two jawans of 21 RR also attained martyrdom during the operation.

12/09/2015

On specific information, CRPF troops (23 Bn & 183 Bn) alongwith SOG & 50 RR carried an operation in general area of Naman and Kakapora, under PS-Kakapora, Distt:Pulwama (J&K). During the operation, terrorists fired at the security forces which was promptly retaliated. In the encounter, one LeT terrorist namely Irshad Ahmed Ganie @ Abu Abdullah Rehan (r/o Awantipora, J&K) was neutralized by the troops.

JAMMU AND KASHMIR 05/10/2015

On specific info, CRPF troops (98 Bn and 162 Bn) along with 28 RR, SOG & State Police carried out CASO. During ops, an encounter broke out between troops & militants. During post encounter search, troops recovered one dead body of LeT militant namely Usman Teda (r/o - POK, A+ category) and recovered AK-47 - 01 No, AK-47 Magazine - 08 No, AK-47 Amns - 212 Rds, Pouch - 01 No & Grenade - 01 No.

CHHATTISGARH 06/10/2015

Action on own int ,CRPF troops (80 Bn and 151 Bn) along with state police carried out CASO. During ops an encounter took place between troops and maoists. After encounter troops searched the area and recovered dead body of a maoist namely peeso (r/o-Bastar), .315 bore rifle-01 no, 12 bore rifle-01 no, E/wire-02 bundles & other misc items.

JAMMU AND KASHMIR 26/10/2015

On specific information CRPF troops (183 Bn and 182 Bn) along with 44 RR and SOG Pulwama carried out joint Search operation. During ops an encounter took place between troops and militants. In this encounter 02 militants were killed namely Afaquallah Bhat (r/o-Pulwama) & Abdul Manan Dar (r/o- Shopian).

Recoveries during the month of September-October, 2015



Lathe Machine Recovered from Munger on 24/9/2015



Cash Recovered from Munger

JAMMU AND KASHMIR 29/10/2015

CRPF troops u/c Insp/GD P.C. Chaudhary of 18 Bn along with troops 9 RR & 62 RR carried out CASO. During ops an encounter broke out with militants. In this incident 01 LeT commander Abu Quasim was killed.

Assam 28/10/2015.

Based on specific intelligence input that one explosive laden truck was coming from Jorhat towards Guwahati, joint troops of CRPF and State Police laid a naka on NH-37, near Balughat Tinali, P.S - Basistha, District - Kamrup (Metro), Assam. At 2000 hrs, a mini truck bearing registration No. AS 01-OD-8113 was intercepted. On search, huge amount of explosive and detonators were recovered:

1. Gelatin Sticks - 4000 (125 gms each)
2. Electric Detonators - 1050
3. Non- Electric Detonators - 1000

OPS SUMMARY – September-October- 2015

Militants / Maoists Killed	–	16
Apprehensions	–	353
Surrenders	–	550
Arms recovered	–	125
Explosives recovered	–	605 Kgs.
Improvised Explosive Devices	–	344 Nos



DG's COMMENDATION DISCS

In recognition of the operational achievements during the month of September and October across the three operational theatres, 56 officers/men have been decorated with DG's Commendation Disc.

WORKS BRANCH

- DG, CRPF have accorded Sanction for a sum of Rs. 8,79,10,000/- for construction of 01 No 180 Men barrack at GC CRPF Sambalpur (Odisha).
- Sanction for a sum of Rs. 6,20,64,300/- for construction of GO's Mess/Suit at GC CRPF Raipur (Chhattisgarh).
- Sanction for a sum of Rs. 3,97,90,000/- for construction of Drill shed including Internal water supply, Sanitary installation etc. at GC, CRPF Bhubneshwar (Odisha)
- Sacntion for a sum of Rs. 9,36,93,000/- for construction of 21 Nos Type-III, 08 Nos type-IV & 02 Nos Type-V Family quarters at RTC-Jodhpur (Rajsthan)
- Sanction for a sum of Rs. 3,65,22,600/- for construction of Internal Road, External Water supply, Sub-Station, Pump room, underground sump, Septic tank & Soak pit at GC, CRPF Sambalpur (Odisha)

FINANCE BRANCH

- Third Standing Bi-Annual Audit Committee Meeting chaired by the DG, CRPF was organized by Finance Branch on 23/09/2015 at 1100 hrs in conference Hall, Directorate General. The IsGP of Zones (Staff Officers to Spl DG/ADG) and all IsGP/DIsGP of Directorate General and RAF/CoBRA attended the meeting.
- Within a period of one year and four Months 4490 Nos of pending audit paras were got settled by launching special drive and monthly/quarterly audit meetings at Zones/Sectors level.

PROVISION BRANCH:-

- MHA has accorded approval for purchasing of 18600 Nos. light Weight Ballistic Protective Eyewear against grenade blast in place of Laser Dazzler under Mod Plan-II (2012-17)
- Competent authority has issued sanction for Rs. 7,82,94,119/- on 14/08/2015 for procurement of 243 Nos P.F Huts. Accordingly supply order placed on 17/08/2015.
- Competent authority has issued sanction for Rs. 13,99,03,544/- on 27/08/2015 for procurement of 184 Nos. Hand held Thermal Imager (Un-cooled). Accordingly supply order placed on 03/09/2015.
- Competent authority has issued sanction for Rs. 24,60,000/- on 18/09/15 for procurement of 04 Nos Pups of Belgian Shepherd (Malinois) breed. Accordingly supply order placed on 23/09/2015.
- MHA has approved the revised Qrs/Specification of Cloth (NYCO) Disruptive Pattern for CoBRA.
- Competent authority has issued sanction for Rs. 45,47,840/- on 15/10/15 for procurement of 3520 Nos Polycarbonate shield. Accordingly supply order placed on 15/10/15.

PERS BRANCH

- 27 DG's Commendation Disc awarded to force personeel for their professional acumen and operational efficiency during this month.
- Review DPC for promotion from A/C to D/C in R/O Shri N.C. Gaur, A/C convened on 22/09/2015.
- DPC for promotion from SMO to CMO (OG) convened on 29/09/15.
- DPC for grant of Senior Time Scale to 394 Asstt. Comdt. Convened on 29/09/15.

RECRUITMENT BRANCH

- Total 55 (Male-51 & Female-04) vacancies of SI/GD through LDCE have been released. Application have been called for by online mode. IG, Central Sectgor is entrusted for responsibility for conducting the examination as per the schedule. GC Kathgodam is detailed as nodal centre/GC for scrutiny of application etc.
- Recruitment of Constable(Tec./Trades) total 3021 vacancies (Male – 2903 & Female-118) have been completed.
- 24588 vacancies of Constable (GD) (Male-22623 & Female-1965) have been intimated to MHA/SSC for recruitment to the post of CT/GD for the year 2015-16. CRPF is Nodal force declared by MHA. Written exam completed on 04/10/2015.
- 48 cases of compassionate appointment of NOKs of deceased have been finalized during the month of September and October, 2015.

TRAINING BRANCH (SPORTS)

CRPF has exhibited outstanding performance in various Sports Competitions from 01/09/2015 to date and secured medals (Gold, Silver and Bronze) as per details given below:-

Competition	International			National			AIPG		
	G	S	B	G	S	B	G	S	B
64th All India Police Athletics Compionship-2015 held at Thiruvananthapuram (Kerala) from 07th to 11th September 2015							9	13	12
55TH National Open Athletics Campionship-2015 held at SAI East Centre, Kolkata (West Bengal) from 16th to 19th September 2015.						2			
49th Asian Bodybuilding and Physique Sports Championship-2015 held at Tashkent, Ezbekistan from 29th September to 04th October, 2015.		1							
Total		1				2	9	13	12

Further, CRPF Central Athletics Team (Women) had won Team Championship and Men Team Runners-up in 64th All India Police Athletics Championship-2015 held at Thiruvananthapuram (Kerala) from 07th to 11th September, 2015. ASI/GD Rajeev Kumar was declared best Athlete (Men) in the championship. Similarly, Soumya B was declared best Athlete (Women) in the Championship.



Insp/GD Borun Yumnam won Silver Medal in 80 Kg Weight Category in the 49th Asian Body Building and Physique Sports Championship at Tashkent, Uzbekistan





Ct/Mahila Ayana Thomas (left) won Bronze (In Team event) & **HC/Mahila Santosh Kumari** (right) won Bronze in 400 Mtr. Hurdle & Bronze (in Team event) in 4x100 Mtr. Relay event in the 55th National Open Athletics Championship 2015 at Kolkata, West Bengal

परिवहन शाखाः–

- अनुपयोगी घोषित किए गए कुल 104 वाहनों के एवज में 104 नये वाहनों की खरीददारी की अनुमति महानिदेशक, के.रि.पु.बल से प्राप्त करके दिनांक 25/08, 18/08 एवं 29/09/2015 को सप्लाई आदेश संबंधित फर्म को प्रेषित किया गया है।
- ग्रुप केन्द्र/रैंज कार्यालय तरालू/खुटा एवं 08 बटालियनों (222 से 229) के लिए 21 नये वाहनों की खरीददारी हेतु स्वीकृति आदेश गृह मंत्रालय से प्राप्त करने के उपरान्त सप्लाई आदेश संबंधित फर्म को दिनांक 29/09/2015 को प्रेषित किया जा चुका है।
- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में इन्टलीजेन्स सेट अप के लिए 413 वाहनों (380 मोटर साईकिल 33 लाईट वाहन) को गृह मंत्रालय से दिनांक 24/09/2015 को प्राधिकृत करवाया गया है।
- एल.डब्ल्यू.ई. ऐरिया में तैनात बटालियनों/10 कोबरा बटालियन हेतु 5,920 मोटर साईकिल की खरीद हेतु प्रस्ताव दिनांक 23/09/2015 को गृह मंत्रालय भेजा गया है।

Tribute to Martyrs



Shaheed CT/GD Ashok Kumar Jat 217 Bn

On 25/10/2015, troops of 217 Bn CRPF received an information about presence of large number of maoists near village Marraiyaguda, PS Maraigudem, Distrist Sukma, Chhattisgarh who were sabotaging the road with the help of local villagers. The troops immediately embarked on an operation under command Shri Vinay Kumar, Asst. Comdt. The troops surreptitiously moved under thick vegetation and darkness and reached closer to the maoists positions. Due to the presence of civilians the troops could not instantaneously open the fire. To locate their target the troops fired illuminating bombs. As the area got lit up, the maoists opened indiscriminate fire at the troops and a fierce encounter ensued. During the encounter Shaheed Ct Ashok Kumar Jat fought valiantly from the front and to the extent of sacrificing his own life. In the encounter a number of maoists are believed to have received severe injuries but they managed to flee taking cover of the villagers. The bravery of the martyr will be forever remembered by the nation

Sharing Memories (Natural Death)



Late CT/GD Omnakuttan
GC Pallipuram



Late CT/GD Prahlad Singh
GC-II Ajmer



विदाई



श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक, के.रि.पु.बल द्वारा श्री जसवंत सिंह, सहायक कमाण्डेंट (निजी सचिव) को उनके विदाई समारोह के दौरान प्रशस्ति पत्र देते हुए



श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक, के.रि.पु.बल द्वारा उप निरीक्षक/जीडी सोहन लाल को उनके विदाई समारोह के दौरान प्रशस्ति पत्र देते हुए



श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक, के.रि.पु.बल द्वारा हवलदार/जीडी बाबू लाल को उनके विदाई समारोह के दौरान स्मृति चिन्ह् भेंट करते हुए

पदोन्नति



Sh. Raju Bhargava
IPS (GJ 95)

Promoted to the rank of IGP and posted to CoBRA Sector



Shri Rajesh Kumar Yadav
DIG (3118)

Repatriated from BHEL posted to DIG (Ops) N/KMR Baramulla (J&K)

स्थानान्तरण



Sh. Harpreet Singh Sidhu
IPS, IGP (9853)

Transferred from COBRA Sector to NW Sector



Sh. Sunil Kumar Parth
DIG (3640)

Transferred from DIG Range Srinagar (North) to O/O IG, M&N Sector



Sh. Sanjeev Dhundia
DIG (2663)

On de-attachment from CPC DIG (Ops) SNR North



Shri H.S. Rawat
DIG (2773)

Transferred from DIG (Ops) N/KMR Baramulla to DIG RAF-I Delhi

विश्व के सबसे बड़े कृत्रिम बुद्धिमत्ता शोध संस्थान में सीआरपीएफ वार्ड शोधकर्ता चयनित



मास्टर शिवेश कुमार

जर्मनी के ब्रेमन स्थित रोबोटिक्स इन्नोवेशन सेंटर (आरआईसी) जोकि विश्व में कृत्रिम बुद्दि और रोबोटिक्स के सबसे बड़े अनुसंधान केंद्रों में से है उसमें ग्रुप केंद्र, रामबाग, श्रीनगर में तैनात श्री वीरेंद्र कुमार, सहायक कमांडेंट (मंत्रा.) के सुपुत्र मास्टर शिवेश कुमार को रोबोट मैनीपुलेटर कंट्रोल में पीएचडी के विकल्प के साथ शोधकर्ता के तौर पर चयनित किया गया है। केंद्रीय विद्यालय, झड़ौदाकलां, नई दिल्ली से वर्ष 2009 में सीबीएसई बारहवीं की परीक्षा प्रथम पोजीशन से उत्तीर्ण करने के उपरांत वे वर्ष 2013 में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सूरथकल, कर्नाटक से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक हुए।

अपनी शानदार अनुसंधान एवं शैक्षणिक क्षमता के कारण इन्होंने मैकेन्ट्रोनिक्स लैब आईआईटी दिल्ली से 2011 में तथा पाडेरबोर्न विश्वविद्यालय जर्मनी के मैकेन्ट्रोनिक्स एंड डायनमिक इंस्टीटयूट से वर्ष 2012 में सफलतापूर्वक ग्रीष्मकालीन अनुसंधान इंटर्नशिप (Summer research internship) पूरी की। इनके अकादमिक रिकार्ड के आधार पर इन्हें 3 सितंबर 2013 से 31 अगस्त 2015 तक कंट्रोल इंजीनियरिंग, रोबोटिक्स और एप्लाइड इन्फॉरमेटिक्स (विशेषज्ञता– उन्नत रोबोट) के विज्ञान कार्यक्रम में मास्टर्स के लिए पूर्ण छात्रवृति के साथ दोबारा चयनित किया गया और फ्रांस के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध विश्वविद्यालय Ecole Centrale De Nantes द्वारा मास्टर्स डिग्री प्रदान की गई। अपने ज्ञान का उपयोग करते हुए इन्होंने अपनी मास्टर थीसिस ह्यूमनॉयड रोबोटिक्स एंड बायोमैकेनिक्स द्वारा पैदल यात्री नेविगेशन तकनीक में सुधार के उपाय सुझाए। मास्टर शिवेश कुमार ह्यूमनॉयड रोबोटिक्स में एक नवोदित शोधकर्ता है और नीदरलैंड, जर्मनी, चीन और भारत जैसे देशों मे आयोजित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में 5 शोधपत्र के लेखक हैं।

उन्होंने सीआरपीएफ परिवार के लिए ख्याति अर्जित की है और वह सीआरपीएफ के सभी परिवारों के लिए एक प्रेरणास्रोत हैं।



श्रीमती एवं श्री वीरेंद्र कुमार, सहायक कमांडेंट(मंत्रा.)



श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक केरिपुबल राजभाषा दिवस के अवसर पर श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय, महानिरीक्षक, मध्य प्रदेश सैक्टर को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए



महानिदेशालय में लेखा समिति की बैठक के दौरान श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण

श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण
शहीदों के परिवार एवं
शौर्य पदक विजेताओं के साथ

